बालविज्ञान पत्रिका

चकमक

जुलाई, 1987

रु. 2.50



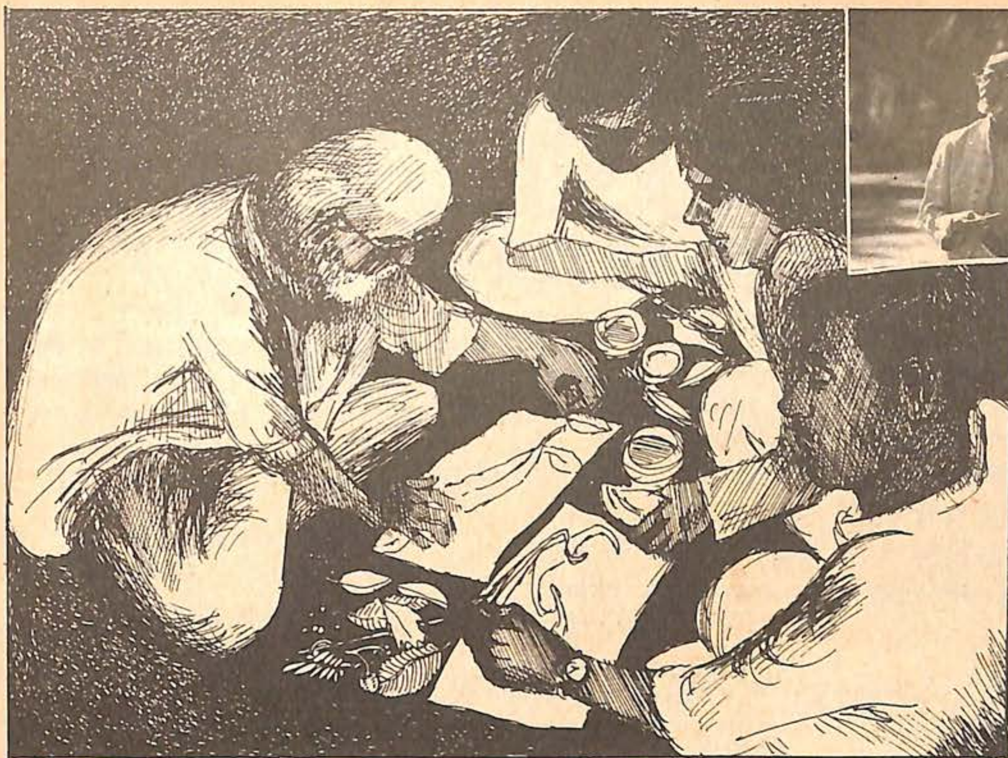
छपी है कैसी घास-फूस से



नारियल की नट्टी तथा आम की गुठली के ही दो हिस्सों की जमावट से बंदरनुमा शकल बन गई। है न मजेदार खिलौना?

पीपल के कटे हुए दो पत्ते और बिल्ली का पिल्ला हमारी ओर घूरता हुआ खेलने को तैयार।





खेल खेल में : कला

रेखांकन : कैरन



गुरूजी

इस अंक में गुरूजी विष्णु चिंचालकर की कलाकृतियां प्रकाशित की गई हैं। ये कलाकृतियां घास-फूस, फूल, पत्ती इत्यादि से बनाई गई हैं। बनाने का ढंग भी गुरूजी ने इसी अंक में समझाया है।

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3 अंक 1 जुलाई, 1987
संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण:
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

इस अंक में

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनी आर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता-
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल 462016 (म.प्र.)

आवरण, श्री विष्णु चिंचालकर

सूखी हुई पत्तियों और सूखे फूलों की पंखुड़ियों से बना हिरण का चित्र। सारे रंग और छटाएं बिलकुल स्वाभाविक हैं। देखो प्राकृतिक रंगों का कमाल।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

1. शिवप्रताप सिंह, 17 वर्ष
2. पत्र मित्रता करना, डांस करना
3. छिर्रा, कटघोरा, बिलासपुर, 495445

1. जितेन्द्र सिंह, 13 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता, कविता लिखना, हंसना और हंसाना

1. मनीषसिंह, 9 वर्ष
2. चित्रकारी करना, क्रिकेट खेलना

1. अमीत सिंह, 9 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, टी. वी. देखना, कहानी पढ़ना

सबका पता : कमरा नं. 12, गुप्ता कालोनी, पैट्रोल पंप, कुनकुरी

1. महेश पटैरिया, 18 वर्ष
2. पत्र व्यवहार एवं चकमक पढ़ना
3. ग्राम व पोस्ट—उनाव वालाजी, दतिया

1. सुमन्त कुमार पुरोहित
2. व्यंग्यचित्र, चकमक पढ़ना
3. शा. उ. मा. विद्यालय, चंदिया

1. जितेन्द्र व्यास, 12 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, सायकिल चलाना, क्रिकेट खेलना
3. अस्पताल के पीछे, चंदिया

1. विनय तिवारी, छटवीं
2. कविताएं, कहानी लिखना, पढ़ना
3. श्री एम. एम. त्रिपाठी, डाकघर—न्यू हैदराबाद, लखनऊ 7

1. भरत पुरोहित, 13 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. शा. उ. मा. विद्यालय, चंदिया, शहडोल

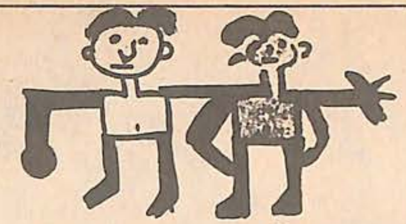
1. ज्ञानेन्द्र सिंह चौहान, 15 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, निशाने लगाना
3. द्वारा श्री महावीर सिंह चौहान, हास्पिटल रोड डबरा, ग्वालियर

1. गजेन्द्र व्यास, कक्षा 9 वीं
2. चकमक पढ़ना, खेलना
3. शा. उ. मा. विद्यालय, चंदिया, शहडोल

1. जितेन्द्र कुमार, 13 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, घूमना, पढ़ना
3. पो. कुड़ाना, तह-सांवेर, इन्दौर

1. राजेश साहू, पांचवीं
2. चित्र बनाना, टी. वी. देखना
3. ग्रा. पो. अर्जुनी, रायपुर

1. उमेश राजोरिया, 18 वर्ष
2. शतरंज खेलना
3. बाग पिपरिया, बरेली, रायसेन



चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

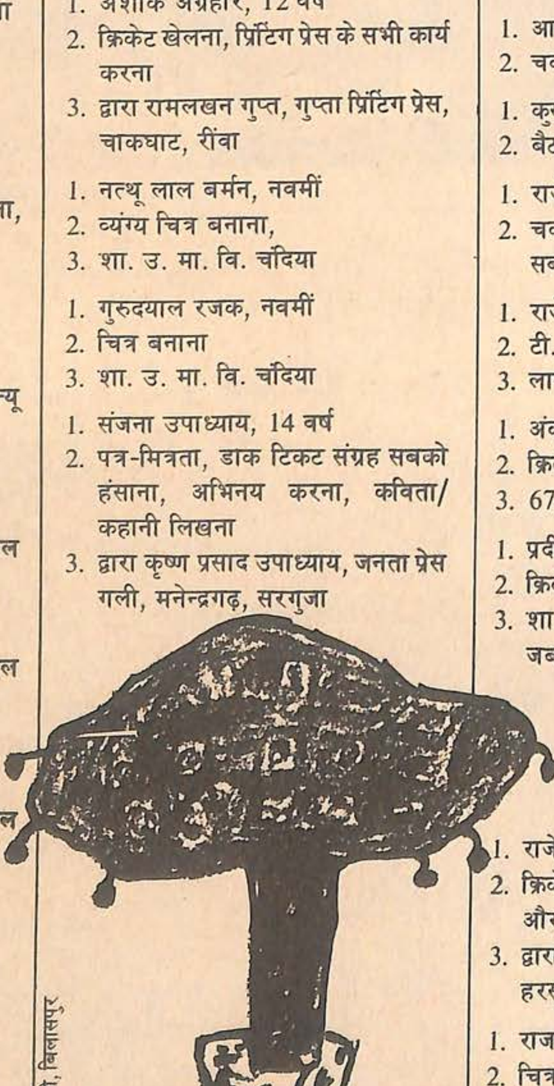
1. धर्मेन्द्र कुमार पटेल
2. चित्रकारी करना, डाक टिकट एकत्रित करना, किताबें पढ़ना
3. हरदी, पोस्ट—लवन, रायपुर

1. अशोक अग्रहरि, 12 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, प्रिंटिंग प्रेस के सभी कार्य करना
3. द्वारा रामलखन गुप्त, गुप्ता प्रिंटिंग प्रेस, चाकघाट, रींवा

1. नत्थू लाल बर्मन, नवमीं
2. व्यंग्य चित्र बनाना,
3. शा. उ. मा. वि. चंदिया

1. गुरुदयाल रजक, नवमीं
2. चित्र बनाना
3. शा. उ. मा. वि. चंदिया

1. संजना उपाध्याय, 14 वर्ष
2. पत्र-मित्रता, डाक टिकट संग्रह सबको हंसाना, अभिनय करना, कविता/कहानी लिखना
3. द्वारा कृष्ण प्रसाद उपाध्याय, जनता प्रेस गली, मनेन्द्रगढ़, सरगुजा



सुमित चौधरी, बिलासपुर

1. संदीप जैन, 16 वर्ष
2. वाद विवाद करना, शतरंज खेलना, भाषण देना आदि
3. ब्राम्हणपुरा कस्बा, सीहोर, 466 001

1. मोहम्मद आमीन, 12 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना
3. द्वारा जमालुद्दीन टीचर, मौहारीटोला, बिलासपुर

1. अखिलेश मौर्य, 15 वर्ष
2. चित्रकारी, कविता, पुरानी इमारतों के चित्र बनाना, विज्ञान प्रतियोगिताओं में भाग लेना आदि
3. द्वारा एम. एस. मुराई, महात्मा गांधी मार्ग, घंटाघर के पास मंडलेश्वर

1. किर्ती कुमारी त्रिवेदी, आठवीं
2. चकमक पढ़ना, अध्ययन करना

1. आनंद त्रिवेदी, सातवीं
2. चकमक पढ़ना, पकड़मपाटी खेलना

1. कुसुम त्रिवेदी, छटवीं
2. बैठक चांदनी खेलना

1. राजेश त्रिवेदी, चौथी
2. चकमक पढ़ना, क्रिकेट खेलना

सबका पता : छोटा चौक, शाजापुर

1. राजेश नापित
2. टी. वी. देखना, क्रिकेट खेलना
3. लाल दरवाजा, टीकमगढ़

1. अंकुर मंडलोई 18 वर्ष
2. क्रिकेट, फुटबाल, टेबिल टेनिस
3. 67, रास मंडल, धार

1. प्रदीप श्रीवास, 16 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना
3. शा. उ. मा. शाला कूम्ही, सतधारा, जबलपुर

1. ओमप्रकाश शर्मा
2. पढ़ना, फिल्में देखना
3. रामपुरा, जिला अजमेर

1. राजेन्द्र मालवीय
2. क्रिकेट खेलना, अच्छी किताबें पढ़ना और सायकिल चलाना
3. द्वारा जे. पी. मालवीय, बलड़ी रोड, हरसूद, 450116

1. राजकुमार कनौजिया, 18 वर्ष
2. चित्रकारी करना, सायकिल चलाना, फिल्म देखना, घूमना
3. 113/225, स्वरूप नगर, छोटी गुटैय्या कानपुर

पाठक लिखते हैं

मई अंक बहुत आकर्षक है, वैसे अब यह पत्रिका निरंतर विकासोन्मुख है। पैर की कहानी, अंधविश्वास, जय शनि महाराज काफी रोचक व उपयोगी लेख हैं।

सवालीराम से अनेक ऐसे प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है जिन्हें आज तक न जानते थे। माथापच्ची तो ग्रेजुएट लोगों को भी हैरत में डाल देती है। 'अपनी प्रयोगशाला' व 'खेल खेल में' अच्छे ज्ञानवर्धक स्तम्भ हैं। कहानी, नाटकों को अवश्य शामिल करें।

□ श्रीमती गिरिजा कुलश्रेष्ठ
सहायक अध्यापिका, तिलौंजरी, मुरैना

'आश्चर्य लोक में एलिस' और 'जय शनि महाराज की' लेख पढ़ा, जो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने अपनी प्रयोगशाला पढ़ी तथा बर्फ से पानी खौलाया। मजेदार खेल भी बनाया। इसी तरह के सरल खेल प्रकाशित किया करें।

□ दीपेन्द्र गुप्ता, मनेन्द्रगढ़,
राजा भैया राय, बाकल,
प्रदीप श्रीवास, कूम्ही, जबलपुर

'हमारे हाथ' विषय पर अप्रैल, 87 का अंक बहुत भाया। नाज़िम हिकमत और केदारनाथ सिंह की हाथों से सम्बद्ध कविताएं और 'हाथ की कहानी' के साथ अन्य सामग्री रोचक है। हिंदी के वरिष्ठ प्रगतिशील कवि श्री त्रिलोचन जी की रचना 'हाथों के दिन आएंगे', प्रस्तुत है—

हाथों के दिन आएंगे, कब तक आएंगे, यह तो कोई नहीं बताता। करने वाले जहां कहीं भी देखा अब तक डरने वाले मिलते हैं। वे सुख की रोटी कब खाएंगे, सुख से कब सोएंगे, कब उसको पाएंगे जिसको पाने की इच्छा है। हरने वाले हर हर कर अपना घर भरने वाले कहां नहीं हैं। हाथ कहां से क्या लाएंगे।

'आश्चर्य लोक में एलिस' का हिन्दी अनुवाद बड़े बच्चों के लिए भी दिलचस्प है। चकमक बच्चों के लिए, साथ ही उनके अभिभावकों को भी पठनीय-संग्रहणीय है।

□ वाचस्पति, जहरीखाल
गढ़वाल

हमारे हाथों ने दुनिया को कहां से कहां पहुंचा दिया। और लगता है—आज की पहचान चेहरों से नहीं सिर्फ हाथों से है, या हाथों की ही है। 'हाथ' वाला अंक प्रेरणा देगा कि 'अहं ब्रम्हा:!''

□ नरेशचंद्र 'नरेश', कोरबा

अप्रैल अंक अच्छा लगा। सांपों के बारे में बहुत जानकारी मिली। 'आश्चर्य लोक में एलिस' भी अच्छा लगा।

□ ललिता चाटे, चांदामेटा, छिंदवाड़ा

मार्च का अंक पढ़कर बहुत आनंद आया। सांपों का संसार, कल्लू की कहानी, आश्चर्य लोक में एलिस, हाथी के चित्र एवं लास्ट पेज पर नाग का चित्र देखकर ऐसा लगा मानो साक्षात नाग हो।

□ नवीन वरखड़े, बैतूल
दिनेश गांठिया, हरसूद

भूल सुधार

मई अंक में प्रकाशित कविता 'मेरी शाला है चिड़ियाघर' की लेखिका श्रीमती गिरिजा कुलश्रेष्ठ हैं।

सांप..... साबुन..... हाथ.....

मार्च अंक में हमने सांप से जुड़ी घटनाएं या कहानी आमंत्रित की थीं। दो पाठकों ने कहानियां भेजी हैं ये हैं जिनेन्द्र जैन 'पंकज', काछी पिपरिया, सागर तथा योगेश पाण्डेय, धरसींवा, रायपुर।

साबुन बनाने की अन्य विधियां कमलेश कुमार शर्मा, दसवीं, नरसिंहगढ़; सैय्यद हसन अली, कटघोरा, बिलासपुर और ईश्वर लाल मेहता, आठवीं उपलाई, रतलाम ने भेजी हैं।

हाथ से संबंधित मुहावरे, कहावतें इन पाठकों ने भेजी हैं:
बृजेश विश्वकर्मा, चौथी, धामना, टीकमगढ़; रवीन्द्र कुमार तिवारी, तखतपुर, बिलासपुर; सुभाषसिंह, अतरैला, रींवा; राकेश खरे, दसवीं, सिमरिया पन्ना; संजय गर्ग, मनीष गर्ग, संगीता गर्ग, यतीन्द्र गर्ग, रिंगनौद, धार; दीनानाथ सोनी, मुंगेली, बिलासपुर; ललिता चाटे, चांदामेटा, छिंदवाड़ा।

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के संबंध में विवरण:

प्रकाशन का स्थान: भोपाल
प्रकाशन की अवधि: मासिक
प्रकाशक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, **अरेरा कालोनी,** भोपाल 462 016
मुद्रक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016

संपादक का नाम: विनोद रायना
राष्ट्रीयता: भारतीय
पता: एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016
उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है: एकलव्य ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1987

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

पेड़ लगाओ



पेड़ लगाओ भाई
पेड़ लगाओ।
मिट्टी पानी लकड़ी पाओ
पेड़ लगाओ भाई
पेड़ लगाओ।
पेड़ों से है जंगल बनता
जंगल में है मंगल मनता
कंद मूल फल शहद चिरौंजी
भर-भर दोना सब मिल खाओ।
जंगल से है पानी गिरता
पानी से है झरना झरता
झरने से हैं फसलें पकती
भूखे पेटों को वे भरती
इसलिए सब पेड़ लगाओ।

मत काटो पेड़ों को भाई
पेड़ हमारे सच्चे भाई
मत काटो भाई की गरदन
घोर अपराध मत कर तू जन

भाई से तुम प्रेम जगाओ
एक-एक सब पेड़ लगाओ।

□ अशोक राय
सातवीं, भर्रीडांड (बिलासपुर)

सच, सरासर गप्प

हमने बनाए तीन तीर
दो तो टूटे हुए
एक के नोका भी नहीं
जिसके नोका नहीं उससे
शेर मारे तीन
दो तो भाग गए एक मरा भी नहीं
जो मरा भी नहीं
उसने नदी घेरी तीन
दो तो सूखी एक में पानी भी नहीं
जिसमें पानी भी नहीं उसमें
तुम्बे तीरे तीन
दो तो फूटे एक के पेंदा भी नहीं
जिसके पेंदा भी नहीं उसमें
चावल पकाए तीन
दो तो कच्चे एक पका भी नहीं
जो पका भी नहीं उससे
ब्राम्हण जिमाए तीन
दो तो भूखे एक छापा भी नहीं
जो छापा भी नहीं उसको
पैसे मिले तीन
दो तो खोटे एक चलता भी नहीं।

□ मनोज जैन छठवीं
पिपल्या मंडी



हेमन्त कुमार, पांच वर्ष, छोटे डोंगर, बस्तर

ओज़ोन की छतरी

आत्माराम



चित्रांकन : अजय रायना

एक थी लोमड़ी। बड़ी चालाक। हमेशा इस ताक में रहती कि दूसरों को उल्लू कैसे बनाए। सारे जंगल में उसकी कुटिलता के किस्से मशहूर थे। तंग आकर जंगल के जानवरों ने उसका नाम 'टेढ़ी' रख दिया। सचमुच वह लोमड़ी थी भी बहुत ही टेढ़ी। बात करेगी तो टेढ़ी, देखेगी तो टेढ़ी आंख से, चलेगी तो टेढ़ी चाल से।

उसी जंगल के बीच से बहती थी एक नदी। इस नदी में रहती थी एक मछली। मछली का नाम था 'सीधी'। मछली थी तो सीधी-सादी, पर कोई टेढ़ी चाल चले तो उससे सावधान भी रहती थी। जंगल के जानवर व पक्षी उसे बहुत मानते थे। टेढ़ी लोमड़ी को यह बात बड़ी बुरी लगती थी कि सारा जंगल 'सीधी' मछली की इतनी प्रशंसा क्यों करता है।

एक दिन टेढ़ी लोमड़ी ने देखा कि सीधी मछली उछल-उछलकर नहा रही है। टेढ़ी लोमड़ी ने और पास आकर देखा तो उसके मुंह में पानी भर आया। सीधी मछली अकेली नहीं थी। उसके पीछे ढेर सारी मछलियां थीं। कोई छोटी, कोई बड़ी, कोई लाल, कोई नीली, कोई हरी, कोई पीली। टेढ़ी लोमड़ी जानती थी कि इस नदी में मछलियां पकड़ना मना है। इसीलिए ये सब निर्भय होकर उछल-कूद मचा रही हैं। सीधी मछली इन सब की मुखिया थी।

''सीधी मछली, ओ, सीधी मछली, सुनो दीदी, हमारी बात सुनो।'' टेढ़ी लोमड़ी ने मुंह में शहद-सी मिठास भर कर आवाज लगाई। सीधी मछली ने पलट कर देखा तो लोमड़ी खड़ी थी। उसने सबसे पहले वहां इकट्ठी मछलियों को डांटकर कहा, ''आज की कसरत यहीं बंद। अब जाओ, नदी की तलहटी में आराम करो।'' देखते ही देखते सारी मछलियां पानी की लहरों में गायब हो गईं। जब अपने सभी संगी-साथी सुरक्षित गहरे पानी

में भेज दिए, तो सीधी मछली ने स्वयं भी किनारे से दूर, बीच नदी में जाकर टेढ़ी लोमड़ी की ओर ताककर कहा, "कहो, टेढ़ी जी, आज इधर कैसे आ गईं? क्या प्यास लगी थी?"।

लोमड़ी ने देखा कि मछली ने बाकी सब गहरे पानी में भेज दिए और खुद भी इतनी दूर जाकर बात कर रही है कि छलांग लगाकर पानी में कूदो तो भी हाथ न आए। उसे बड़ा गुस्सा आया। पर किसी तरह क्रोध पर काबू करके ऊपर से मीठी बनती हुई बोली, "अरे दीदी, मैं तो बहुत चाहती हूं कि तुमसे रोज मिलूं। पर तुम्हीं दूर-दूर रहती हो। कभी तो इस नदी से बाहर भी निकला करो। आजकल जंगल में गुलमुहर के लाल-लाल फूल खिल रहे हैं। आओ, आज अपनी पूरी टोली को जंगल की सैर करा लाओ।"

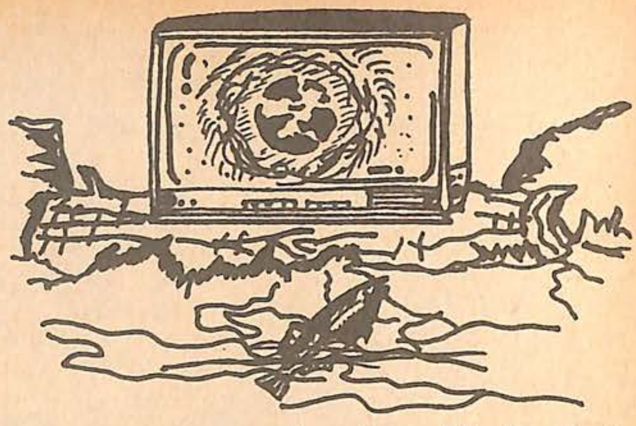
मछली सीधी तो थी, पर मूर्ख नहीं थी। ताड़ गई कि जरूर दाल में कुछ काला है। वह लोमड़ी से बोली, "अरे टेढ़ी जी, जंगल की सैर तो हम जरूर करतीं, पर पानी से बाहर कैसे आएं? हमारी तो देह ही ऐसी बनी है कि पानी से बाहर आते ही हम तो मर जाएं?।

"यही तो मैं चाहती हूं।" लोमड़ी ने मन में सोचा पर यह बात कहती कैसे? अभी लोमड़ी सोच ही रही थी कि मछली ने उसे नदी में आने निमंत्रण दे दिया, "टेढ़ी जी, आज तो आप नदी में आ ही जाओ। आज ओज़ोन पर्व है।" मछली बोली।

"ये ओज़ोन पर्व क्या है?" लोमड़ी आंखें तरेर कर बोली।

"अरे !तुम नहीं जानतीं ओज़ोन पर्व को?" मछली





ने हैरान होकर पूछा। "तुम तो सब रीति-रिवाजों को भूल गई हो। हम लोगों के पूर्वज तो न जाने कब से इस पर्व को मनाते आ रहे हैं। फिर ओज़ोन के उपकार तो तुम स्थलवासियों पर ही ज्यादा हैं, टेढ़ी जी !"

"वह कैसे?" टेढ़ी ने खिसियाते हुए पूछा। लोमड़ी को बड़ा गुस्सा आ रहा था। "सारी दुनिया जानती है कि ऑक्सीजन ही हमारी प्राणवायु है। और तुम ओज़ोन का गुण-गान कर रही हो !"

सीधी मछली झट से डुबकी मारकर नदी में गई और एक पेटी उठा लाई। असल में वह टेलीविजन सेट था। यह सेट ऐसा था कि प्रोग्राम दिखाने के अलावा इसमें अंदर फिल्म लगाई जा सकती थी। बटन दबा दो तो वह फिल्म टी.वी. सेट के स्क्रीन पर दिखाई देने लगती थी। मछली ने पहले ही उसमें एक फिल्म लगा रखी थी। नदी के बीच में एक बड़े पेड़ का तना कहीं से बहता आ गया और फंसा पड़ा था। इसी पर टी.वी. सेट लगा था। मछली ने बटन दबा दिया और लोमड़ी की तरफ इशारा किया "ध्यान से देखो।"

लोमड़ी वहीं किनारे पर बैठकर देखने लगी। सब से पहले टी.वी. के परदे पर गोल-गोल घूमती धरती और उसके चारों ओर का वायुमंडल दिखाई दिया।

उधर परदे पर तो तसवीरें आती जा रही थीं और इधर सीधी मछली सुनाती जा रही थी कमेंटरी। "देखो, इस गोल-गोल घूमती धरती को देखो। कोई नहीं जानता कि इस धरती का जन्म कैसे हुआ। हां, अटकलें जरूर लगाई गई हैं। कुछ तो कोरी गप्प ही समझो कि दूर ब्रम्हांड में तरह-तरह की गैसों के मिश्रण ने ही आज की धरती को जन्म दिया। यह भी कहते हैं कि किसी समय धरती और चन्द्रमा एक थे। बाद में अलग हुए। बड़ा टुकड़ा धरती बन गया और छोटा टुकड़ा चन्द्रमा बनकर धरती के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।" तभी किसी ने बीच में टोका, "कहते हैं दीदी, धरती शुरू में आग का गोला थी?" कहीं से खरगोश की आवाज आई।

मछली ने पलटकर देखा तो वहां सारा जंगल ही



इकट्ठा हो गया था। लोमड़ी सबसे आगे बैठी थी। शेर भी बाल-बच्चों सहित विराजमान था। चीता भी, चीतल भी, हिरन भी, भेड़िया भी, खरगोश भी। उधर पेड़ों पर मोर, तोते, कबूतर, गौरैया आ बैठे थे। यहां तक कि गिद्ध और चमगादड़ भी। बंदर और लंगूर भी उछलना-कूदना बंद करके सीधी मछली का भाषण सुनने आ गए थे।

"अरे भाई, तुम सबको कैसे खबर लगी कि यहां क्या हो रहा है?" सीधी मछली ने पूछा।

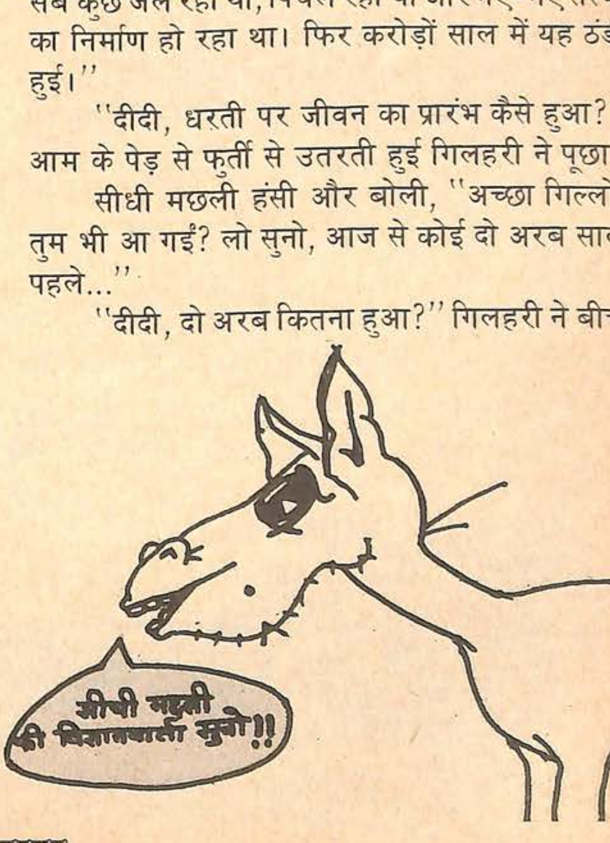
सभी जानवर एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। तभी भीड़ की परिक्रमा-सा करता हुआ भोलूराम गधा आगे आया और बोला, "दीदी आज इतवार की मेरी छुट्टी थी। मैं अपने बाल-बच्चों के साथ जंगल की सैर के लिए आया था। यहां नदी के किनारे टेढ़ी लोमड़ी को सारी शैतानी छोड़कर चुपचाप ध्यान लगाकर बैठा देखा तो चौंक पड़ा। पास आया तो आपकी बातें कान में पड़ी। मुझे लगा कि हमेशा की तरह आज भी मछली दीदी बड़े ही काम की बात बता रही हैं। सो, मैंने सोचा कि पूरे जंगल को ही खबर क्यों न कर दूं। जोर-जोर से रेंक कर मैंने सारे वनवासियों को पुकारना शुरू किया, 'सुनो भाइयों, जल्दी आओ। सीधी मछली की विज्ञानवार्ता सुनो।'

सीधी मछली हंसी ओर फिर वापस अपने विषय पर लौटती हुई बोली, "तो खरगोश भाई, तुम पूछ रहे थे कि धरती शुरू में आग का गोला थी कि नहीं। तो भाई, यह बात सच है। शुरू में धरती आग का एक दहकता गोला ही थी। गोल-गोल घूमती एक भट्ठी जिसके भीतर सब कुछ जल रहा था, पिघल रहा था और नए-नए तत्वों का निर्माण हो रहा था। फिर करोड़ों साल में यह ठंडी हुई।"

"दीदी, धरती पर जीवन का प्रारंभ कैसे हुआ?" आम के पेड़ से फुर्ती से उतरती हुई गिलहरी ने पूछा।

सीधी मछली हंसी और बोली, "अच्छा गिल्लो, तुम भी आ गईं? लो सुनो, आज से कोई दो अरब साल पहले..."

"दीदी, दो अरब कितना हुआ?" गिलहरी ने बीच





में ही टोका।

"छिः, इतना भी नहीं जानती? अरे 2 के आगे 9 बार शून्य की बिंदियां लगाओ, तब बनेगी यह संख्या-2 अरब यानी 200 करोड़। तो आज से 200 करोड़ वर्ष पहले धरती के वायुमंडल में ऑक्सीजन आई। इसके साथ ही समुद्रों में एक कोशिका वाले पौधे और प्राणी पैदा हुए। जैसे कि तुम सामने परदे पर देख रही हो, एक कोशिका वाले शैवाल, एक कोशिका वाले जीवाणु, एक कोशिका वाले विषाणु, एक कोशिका वाले अमीबा जैसे जीव। ये सब अपनी एक ही कोशिका में सारे काम कर लेते थे। इन्होंने भी अपने शरीर में ऊर्जा के लिए ऑक्सीजन का सहारा लिया। इन्हीं की क्रिया से वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ने लगी। लेकिन अभी तक जीवन समुद्र में ही था। जमीन पर जीवन की चहल-पहल शुरू नहीं हुई थी।"

"ऐसा क्यों था, दीदी? जमीन पर जीवन क्यों नहीं शुरू हुआ?" भोलूराम गधे ने रेंककर अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

"अरे भोलूराम, जमीन पर जीवन कैसे शुरू होता रे, सूरज की सारी किरणें जमीन पर सीधी बरस रही थीं। वायुमंडल में कोई ऐसी चीज नहीं बनी थी, जो सूरज की रोशनी को छानकर धरती तक आने दे। मतलब यह कि ओज़ोन की छतरी नहीं बनी थी।"

"यह ओज़ोन क्या बला है, दीदी?" वनराज सिंह अपनी भारी-भरकम आवाज में गरजे।

सीधी मछली बताने लगी, "देखो, सामने परदे पर तुम हमारी आज की धरती के वायुमंडल की तस्वीर देख रहे हो? इसमें सबसे ऊपर है अयन-मंडल। इससे नीचे धरती की ओर आएं तो ओज़ोन छितरा हुआ है। यह जरा नीलापन लिए एक गैस है, जो ऑक्सीजन की बहन ही समझो। ऑक्सीजन के एक अणु में दो परमाणु होते हैं, जबकि ओज़ोन में तीन परमाणु। इस ओज़ोन की मोटाई कुल मिलाकर ३ मिलीमीटर से अधिक नहीं है। पर यह एक चादर की तरह भी नहीं तनी हुई। बस पूरी पृथ्वी के चारो ओर वायुमंडल में फैली हुई है। इसी के कारण जमीन पर जीवन संभव हुआ।"

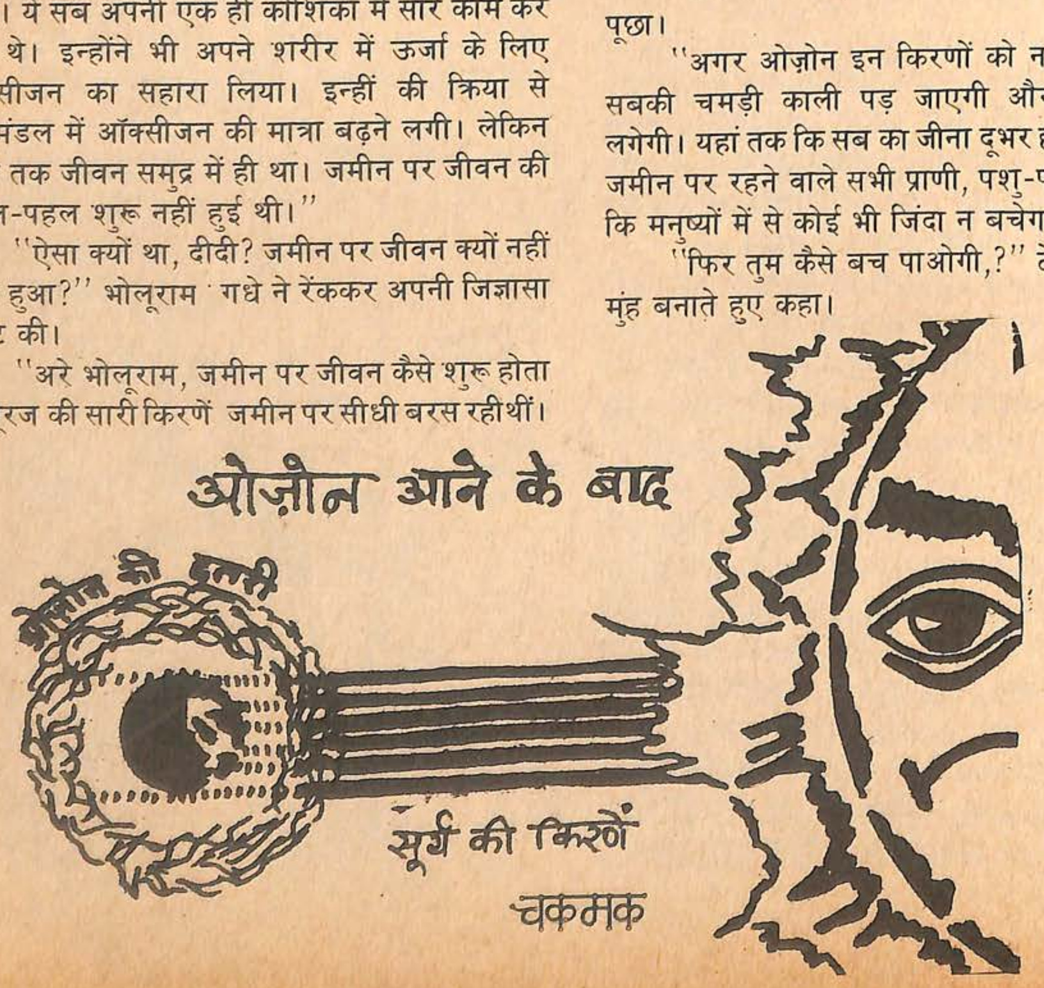
"वह कैसे दीदी?" टेढ़ी लोमड़ी से चुप नहीं रहा गया।

"लोमड़ी बहन," सीधी मछली ने जवाब दिया, "यह ऐसे होता है कि ओज़ोन गैस की यह खूबी है कि यह अपने भीतर सूरज की रोशनी के साथ आने वाली कुछ किरणों को सोख लेती है।"

"अगर न सोखे, तो क्या हो?" चीते ने गुर्राकर पूछा।

"अगर ओज़ोन इन किरणों को न सोखे तो तुम सबकी चमड़ी काली पड़ जाएगी और फिर जलने लगेगी। यहां तक कि सब का जीना दूभर हो जाएगा और जमीन पर रहने वाले सभी प्राणी, पशु-पक्षी, यहां तक कि मनुष्यों में से कोई भी जिंदा न बचेगा।"

"फिर तुम कैसे बच पाओगी,?" टेढ़ी लोमड़ी ने मुंह बनाते हुए कहा।



लेकिन सीधी मछली ने इस टेढ़े सवाल पर न तो भौंहे टेढ़ी की, न मुंह बनाया। उसी तरह आराम से समझाने लगी, "लोमड़ी बहन, हम पानी में रहते हैं। हमारे ऊपर इन किरणों का कोई असर नहीं पड़ता। तभी तो समुद्र में जीवन उस समय भी हिलोरें लेने लगा था, जब वायुमंडल में ओज़ोन नहीं बनी थी।"

मैना ने सुरीली आवाज में कहा, "इसका मतलब यह है कि वायुमंडल में यदि ओज़ोन न हो, तो धरती के प्राणी जीवित नहीं रह सकते।"

"हां, दीदी, फिर आगे बताओ न।" मोर ने 'पेंको-पेंको' की मीठी आवाज से जंगल गुंजाते हुए पूछा।

"मयूर भाई, मैं तो यही बता रही थी कि हम आज ओज़ोन पर्व मना रही हैं।" सीधी मछली ने कहा।



"तुम क्यों मना रही हो ओज़ोन-पर्व? तुम्हारा ओज़ोन से क्या लेना-देना? अरे, ओज़ोन तो हमारी रक्षा करती है- हम ज़मीन वालों की। तुम हो पानी के जीव। तुम्हें ओज़ोन का त्योहार मनाने की क्या पड़ी?" टेढ़ी लोमड़ी गुस्से में बोली। आज वह सारे जंगल के जीवों के सामने सीधी मछली को अपमानित करने पर तुली थी।

सीधी मछली को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, "बहन, तुम हमें पानी वाले जीव कहकर अपने से अलग समझती हो। हम तो तुम्हें या जमीन पर रहने वाले दूसरे जीवों को अलग नहीं मानते। हमारा जीव और रहन-सहन अलग हुआ तो क्या? हैं तो हम सब इसी धरती के वासी। कल को यदि ज़मीन पर रहने वाले मर गए तो हमें क्या अच्छा लगेगा?"

"पर, दीदी, हम ऐसे ही क्यों मर जाएंगे?" गुटर-गुटर करते हुए कबूतर ने प्रश्न किया।

"प्यारे कबूतर, मुझे तो यही चिंता सता रही है, अगर हमारे वायुमंडल की ओज़ोन की छतरी में खराबी आज जाए तो क्या होगा?"

"पर दीदी, यह तो बताओ, आसमान में जब करोड़ों साल से ओज़ोन की परत बनी हुई है, तो अब कैसे नष्ट हो जाएगी? मैं सबसे लंबा हूं, पर मेरा मुंह भी वहां तक नहीं पहुंचता दीदी। मैं भी ओज़ोन-परत को नहीं खा सकता।" यह कहकर लंबी गर्दन वाला जिराफ हो-हो करके हंसने लगा।

बाकी सब वन-पशु भी जिराफ की इस बात पर खिलखिलाकर हंसे। पर सीधी मछली तो वैसे ही गंभीर बनी हुई थी। वह बोली,"देखो भाइयो, यह हंसने की बात नहीं है। मैंने यह कब कहा कि तुम लोग ओज़ोन की परत मिटा दोगे? खतरा तो आदमी से है।"

तभी बड़ी तेज आवाज के साथ एक हवाई जहाज उनके ऊपर से गुजरा। सीधी मछली ने दूर आकाश में गायब होते हुए उस वायुयान की ओर इशारा किया और बोली, "देखते हो, यह आवाज से भी तेज उड़ने वाला विमान? जब इसका ईंधन जलता है, तो उससे तरह-तरह की गैसें निकलती हैं और ओज़ोन की परत से टकराती हैं, तो उसे जहां-तहां नष्ट कर देती हैं...."

अभी सीधी मछली की बात पूरी नहीं हुई थी कि उछलता-कूदता गयालाल बंदर वहां आ पहुंचा। आते ही उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई एक बोतल से सबके ऊपर खुशबू का छिड़काव शुरू कर दिया। वह बोतल की डाट को दबाता तो उसमें लगी पिचकारी से खुशबू-भरी गैस निकलती और सारी हवा में बड़ी सुहावनी सुगंध भर देती।

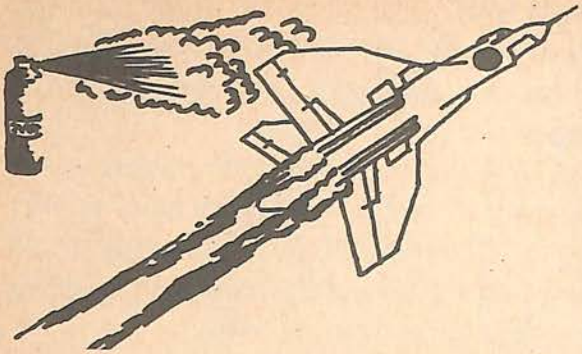
सीधी मछली ने उसे जोर से डांटा, "बंद करो ये शैतानी। तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो।"

बेचारा गयालाल सहम गया। उसने दूसरे बंदर आयालाल के हाथ में बोतल पकड़ा दी और चुपके से पीछे की कतार में जाकर घुटनों में मुंह छुपाकर बैठ गया।

"ऐ आयालाल, फेंक दे यह बोतल पानी में।" सीधी मछली का गुस्सा अब भी शांत नहीं हुआ था।

टेढ़ी लोमड़ी से न रहा गया। झपटकर आयालाल बंदर के पास जा पहुंची और खुशबू की बोतल उसके हाथ से छीनकर बोली, "ला रे, ये बोतल मुझे दे। बड़ी आई है चालक कहीं की। पानी में बोतल फिंकवा रही है कि ले जाए अपने घर।"

टेढ़ी लोमड़ी ने हाथ नचा-नचाकर मछली को कोसा। इस पर भी सीधी मछली शांत रही। बल्कि उसे अपने ऊपर ही गुस्सा आ रहा था कि उसने नाहक ही



नादान बंदरों को इतनी जोर से डांट दिया। उसे पुरानी कहावत याद आई कि 'सीख न दीजे बांदरा, कि घर बया का जाए।' बहुत प्यार से लोमड़ी को समझाती हुई मछली बोली, "देखो बहन, तुम्हारे हाथ में खुशबू की जो बोतल है, उसमें कोई साधारण इत्र नहीं है। यह नया रासायनिक इत्र है। इन्हें 'एरोसोल' कहते है। इनके कण हवा में तैरते हुए ऊपर ओज़ोन की परत तक जा पहुंचते है। ये कण ओज़ोन के साथ रासायनिक क्रिया करके उसको नष्ट कर देते हैं। आजकल अमीर देशों में इनका इस्तेमाल बहुत बढ़ गया है। इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है।"

"बोतल फेंक दे।" वनराज सिंह जोर से गरजकर बोला। टेढ़ी लोमड़ी उसकी आवाज सुनकर थर-थर कांपने लगी। उसने झट से खुशबू की बोतल पानी में फेंक दी।

"शाबाश लोमड़ी जी, ये हुई न अक्ल की बात।" भोलूराम गधा तालियां बजाता उठ खड़ा हुआ। फिर सबकी ओर देखते हुए बोला, "भाईयो, आप लोग मुझे कम अक्ल का बुद्धू गधा कहकर चिढ़ाते हो। पर आदमी को तो देखो। अरे जिस चीज से इतना खतरा है, उस चीज को क्यों बनाता है? क्या जरूरत है कि आवाज से तेज विमान बनाए जाएं? क्या जरुरत है कि एरोसोल छिड़के जाएं?"

"तेज विमान बंद करो।" लंगूरों के सरदार ने नारा लगाया।

"ऐरोसोल बंद करो।" दूसरी ओर से बंदरों की टोली बोली।

अब तो सारे जानवर उठ खड़े हुए और बड़े जोश से नारे लगाकर आसमान गुंजा दिया।

वनराज सिंह ने गरजकर घोषणा की, 'आज से सारे जंगल में ओज़ोन-पर्व मनाया जाएगा।' सारे जानवरों ने तालियां बजाकर इस घोषणा का स्वागत किया।

थोड़ी देर गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने के बाद, जब सब लोग शांत हो गए, तो सीधी मछली ने अपने टेलीविजन के परदे की ओर इशारा किया, "सुनो, भाई। कोई जरूरी सूचना है, ध्यान से सुनो।"

टेलीविजन पर एक आदमी की आकृति उभरी। वह बोलने लगा, "अब एक विशेष सूचना सुनिए। कुछ दिन पहले वायुमंडल में हाइड्रोजन बम का विस्फोट किया गया था। इस विस्फोट के कारण ओज़ोन की परत में कमी आ गई है। इस के कारण हानिकारक किरणें सीधे धरती पर पहुंच रही हैं। ये किरणें खास तौर से रोहिणी नदी के निकट के जम्बू पर्वत के निवासियों पर बुरा असर डालेंगी। यह क्षेत्र तुरंत खाली कर दिया जाए। सूचना समाप्त हुई।"

यह सुनते ही सारे जानवरों में खलबली मच गई। उनके बच्चे रोने-चिल्लाने लगे। सीधी मछली ने उन्हें समझाया, "देखों भाइयों, मेरी चिंता सच हो गई। पर आप लोग घबराइए नहीं। हिम्मत मत हारिए। शाम हो रही है। सूरज छुप रहा है। रात में तो कोई खतरा है नहीं। पर रातोंरात अंधेरे में ही आप यह इलाका छोड़ दीजिए। जो भाई तैरना जानते हैं, वे नदी मे तैरकर पार के जंगल में चले जाएं। भोलूराम गधे को चाहिए कि वह सारी पहाड़ी में यह सूचना फैला दे। गुटरगूं कबूतर और पेंको मोर को तुरंत सारे जंगल को खबर कर देनी चाहिए।"

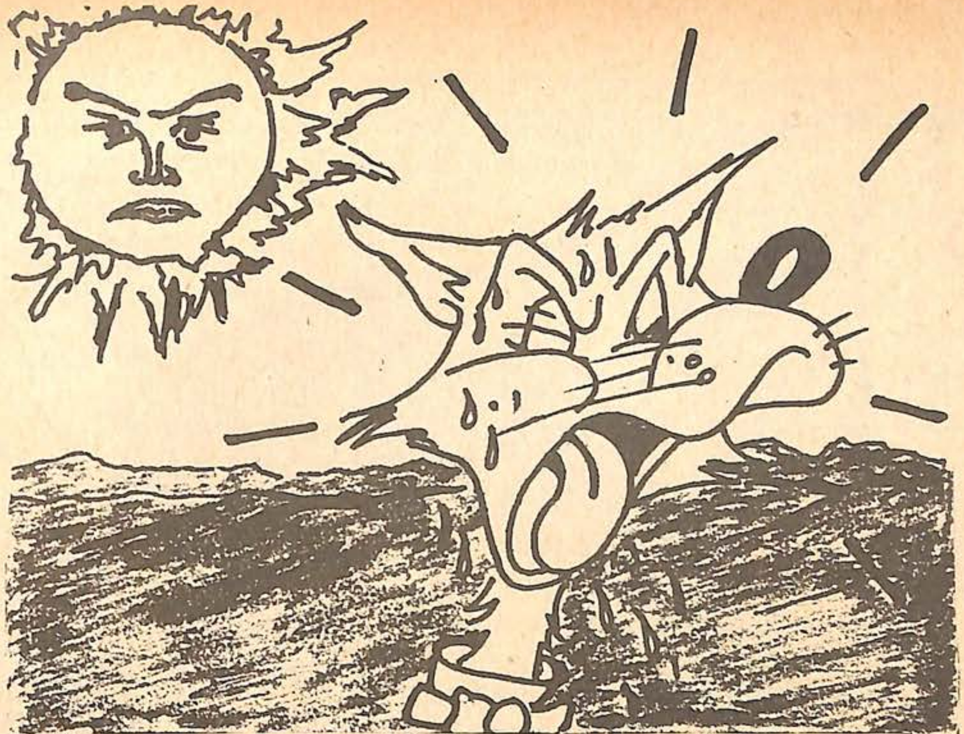
"पर तुम कहां जाओगी?" टेढ़ी लोमड़ी ने सीधी मछली से पूछ ही डाला।

"हम तो यहीं पानी में रहेंगे। ये किरणें हमारा यहां पानी में कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।" सीधी मछली बोली।

"मैं सब समझती हूं तुम्हारी चाल। तुम चाहती हो कि सारा जंगल खाली हो जाए और फिर तुम इस पर एकछत्र राज करो।" टेढ़ी लोमड़ी भला अपनी कुटिलता से क्यों बाज आने लगी?

"ना, ना, मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा राजपाट।" सीधी मछली अब शांति से ही बात कर रही थी। "मैं तो यहां इस नदी में ही खुश हूं। हां, तुम सब लोग चले जाओगे, तो चहल-पहल खत्म हो जाएगी। सुनसान जंगल मुझे बड़ा खलेगा। शायद मैं भी कहीं और जाकर रहूं। क्या पता नदी की लहरें फिर मुझे तुम सब लोगों से





मिला दें। मैं भी वहीं पहुंच जाऊं, जहां तुम सब बसोगे।"

"बस-बस, बातें न बना।" टेढ़ी लोमड़ी को अब भी मछली की बातों में टेढ़ापन ही नजर आ रहा था। वह बोली, "मैं तो यही रहूंगी। अकेली जंगल में राज करूंगी।"

सीधी मछली ने बहुतेरा समझाया पर टेढ़ी लोमड़ी टस से मस न हुई। सारे जानवर अपने-अपने परिवार सहित नदी पार करके एक दूसरे जंगल में चले गए, लेकिन टेढ़ी लोमड़ी तो वहीं डेरा जमाए पडी रही। दूर पर्वत से भोलूराम गधे की रेंकने की आवाज आ रही थी। आधी रात बीत गई। फिर भी वह गधा सारे जंगल को चेतावनी देने में जुटा हुआ था।

उधर गुटरगूं कबूतर और पेंको मोर ने भी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते हुए हर पशु-पक्षी को जंगल खाली करने की पुकार सुना दी। धीरे-धीरे सारा जंगल खाली हो गया। संकट में सारे ज़ानवर एक हो गए। शेर और चीते का परिवार अपने कंधों पर हिरन के बच्चों को झुलाता हुआ नदी पार ले गया। बकरियां डर के मारे मिमियाती रहीं, पर किसी ने उनको मारने के लिए पंजा नहीं उठाया।

सारे जानवर जा चुके थे। अंधेरी रात में ऊंघते जंगल से कोई आवाज नहीं आ रही थी। कभी-कभी तेज हवा से केवल पत्ते ही खड़कते। पौ फटी। सुबह हुई सीधी मछली ने अपना मुहं पानी से बाहर निकाला और किनारे की ओर देखा। देखती क्या है टेढ़ी लोमड़ी इधर से उधर भाग रही है। वह चिल्ला रही थी, "बचाओ, बचाओ। मेरा बदन जल रहा है।"

सीधी मछली ने उसे आवाज लगाई, "लोमड़ी दीदी, पानी में कूद पड़ो। यहां तुम पर हानिकारक किरणों का असर नहीं पड़ेगा।"

"नहीं, मैं तेरी मदद नहीं लूंगी।" हांफते-हांफते भी लोमड़ी चिल्ला रही थी।

"मान जाओ दीदी, क्यों व्यर्थ में जान गंवाती हो। यहां पानी में आ जाओ।" सीधी मछली अब भी प्रार्थना कर रही थी।

सूरज और चढ़ आया। धूप तेज हो गई। हानिकारक किरणों की बौछार से लोमड़ी तिलमिलाने लगी। जब और ज्यादा सहन न कर सकी तो उसने दौड़कर पानी में छलांग लगा दी। इस तरह उसकी जान बची। सीधी मछली बड़ी खुश हुई कि टेड़ी लोमड़ी अंत में राह पर आ ही गई।

सीधी मछली ने पानी में डुबकी लगाई और कमल के पत्तों में कमलगट्टे, सिंघाड़े और कमल की जड़ें रखकर ले आई। तैरती हुई वह लोमड़ी के पास गई। टेढ़ी लोमड़ी ने बड़ी मुश्किल से आंखे खोलीं। सीधी मछली ने लोमड़ी को कमल के पत्ते पर रखा भोजन पकड़ा दिया। बड़ी कठिनाई से मुंह खोलकर लोमड़ी ने वह सब खा लिया। मछली ने कहा, "दीदी, यह हमारे कल के ओज़ोन पर्व का प्रसाद है।"

टेढ़ी लोमड़ी ने सकुचाकर सीधी मछली से अपने टेढ़ेपन के लिए क्षमा मांगी। और फिर भरी आंखों से विदा लेकर नदी पार करके वह भी उसी जंगल की ओर चली गई, जहां दूसरे जानवर गए थे। ● ●

('शिक्षा भारती' के सौजन्य से)



मिट्ठू

मिट्ठू अब पेड़ों पर कम
और तस्वीरों में अधिक
दिखता है।
अब अधकटे पेड़
नंगे पहाड़
सूखी ज़मीन
तस्वीरों के मिट्ठू से बेजान हैं
ये हमेशा ऐसे तो न थे!

आज ज़हरीली गैसें
गंदगी सड़कों और नालों की,
नदियों में रासायनिक प्रदूषण
हर क्षण-हर ओर
हमें आंखें फाड़ देखती हैं!
कहां गए वे जंगल
वह साफ हवा
किस सभ्यता के जाल में
खो गए
मिट्ठू और हमारे
जीवन के वे आधार!

■लाल्टू

मिट्ठू तंग आ गया है
आधुनिकता की इस दिशा से
अब पहाड़ों की नंगी दरारें
ये बचे-खुचे पेड़
यह हर क्षण धुंधला होता आकाश
ये चाहते हैं, हम पूछें
ये चाहते हैं, हम सोचें
विनाश के इस षड्यंत्र के विरुद्ध
हम मिट्ठू का साथ देंगे कब? ●

चित्र: स्वाधीन जैन

दो सौ साल पहले की बात है। किसी विदेशी पत्रिका में एक लेख छपा, जिसमें कहा गया कि अधिक थकावट या कमजोरी के साथ सिर दर्द हो तो लोहे का बुरादा खाना चाहिए। सुनने में यह बात कुछ अटपटी-सी लगती है! क्या लोहे का बुरादा खाने की चीज है? आज भी किसी को खून की कमी हो तो डाक्टर भी उसे लोहा ही खाने को देते हैं। हां, पर बुरादा नहीं! सिर्फ दवाई की गोली के रूप में। मतलब, हम सबके खून में लोहा पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। लोहे की कमी से कई परेशानियां हो जाती हैं। थकावट महसूस होने लगती है और व्यक्ति उदास-सा रहता है। हमारे देश में सबसे ज्यादा लोहे की कमी महिलाओं में पाई जाती है। इसका कारण है, आहार में लोहे की पर्याप्त मात्रा का न मिलना। लोहा हम जैसा देखते हैं ठीक वैसा ही हमारे शरीर में नहीं होता।

लोहा

एक अद्‌भुत धातु

लोहा हर प्राणी के खून में पाए जाने वाले **हीमोग्लोबिन** का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। खून के ज़रिए शरीर की सभी कोशिकाओं तक आक्सीजन पहुंचाने का काम लोहा ही करता है। 19वीं शताब्दी में पहली बार एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने यह रहस्य खोला कि खून में लोहा होता है। तभी की एक रोचक कहानी है। कहा जाता है कि इस खोज के बारे में सुनकर रसायन शास्त्र के एक छात्र ने तय किया कि वह अपने खून से लोहा निकालकर अपनी प्रेमिका के लिए एक अंगूठी बनाएगा। उसने तन-मन लगाकर यह काम शुरू किया। वह लगातार रासायनिक तरीके से अपने खून में से लोहा निकालता रहा। पर पर्याप्त लोहा इकट्ठा करने से पहले ही वह **'एनीमिया'** (खून की कमी का रोग) के कारण चल बसा। मान लो, किसी मानव शरीर के सारे खून से पूरा लोहा निकाल भी लिया जाए तो कुल कितना लोहा इकट्ठा होगा? बस, केवल तीन ग्राम। यह मात्रा लगती तो मामूली-सी है, पर हमारा जीवन इसी पर निर्भर है।

केवल प्राणी ही नहीं पौधे भी लोहे का उपयोग करते हैं। क्लोरोफिल बनाने के लिए लोहा बेहद ज़रूरी है। समुद्र में पाई जाने वाली **प्लैंकटन काई** एक साल में पांच लाख टन लोहे का इस्तेमाल करती है। इतना लोहा तो शायद दुनिया की सभी स्टील फैक्टरियों का कुल एक साल का उत्पादन होगा। बस फर्क यह है कि जितने लोहे का उपयोग प्लैंकटन काई करती है, लगभग उतना ही लोहा हर साल मृत काई के अवशेषों से फिर समुद्र के पानी में मिल जाता है। पर क्या पृथ्वी से हम हर साल जितना लोहा निकालते हैं उतना ही पृथ्वी को लौटा पाते हैं?

पृथ्वी को खोद-खोदकर लोहा तो हम धड़ाधड़ निकाल लेते हैं, पर इतना भी नहीं करते कि जिन खानों का इस्तेमाल कर लिया हो उनको भरकर फिर पृथ्वी को दुबारा उसी स्थिति में छोड़ें जिसमें उसे पाया था। भारत में हजारों हेक्टेयर ज़मीन बंजर हुई जा रही है, चूंकि खानों की जगहों को दुबारा उपजाऊ करने का कष्ट कोई नहीं उठाना चाहता। इसके अलावा लोहे के अयस्क (जिस रूप में प्रकृति में वह पाया जाता है) के एक टन को निकालने पर लगभग दो टन मलबा वहां इकट्ठा हो जाता है। इस कारण से खानों के आस-पास की ज़मीन पर मलबा बिखर जाता है और वह भी बंजर हो जाती है। ऐसा लगता है कि लोहे की खोज में मनुष्य अपनी सुध-बुध खो बैठा है और खोदते-खोदते वह अपनी धरती को ही उलट कर रख देगा।



लोहे के अलावा शायद ही कोई तत्व होगा जो मानव की संस्कृति और सभ्यता के साथ इतने गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। पुराने जमाने में कुछ आदिवासी लोग तो लोहे को सोने से ज्यादा मूल्यवान मानते थे, और यह ठीक भी था। चूंकि लोहे से ही उनके औजार बनते थे, जिनसे वे शिकार कर पाते थे। कई सभ्यताओं में तो लोहे के ही गहने पहने जाते थे। एक ज़माने में रोम में शादी की अंगूठी भी लोहे की बनाई जाती थी। पर जैसे-जैसे लोहे को शुद्ध करने के तरीके विकसित होते गए, लोहे की कीमत कम होती गई।

लुहार के काम को मान्यता देने वाले राजा सौलोमन की एक कथा प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि लगभग तीन हज़ार साल पहले जेरूसलम में जब राजा ने एक विशाल और भव्य मंदिर तैयार करवाया तो सभी कारीगरों को एक शानदार दावत पर बुलाया। सब मेहमान जब दावत पर आ चुके तो एकाएक राजा सौलोमन ने भरी सभा से यह सवाल किया, "मंदिर बनाने में सबसे महत्वपूर्ण कार्य किसका रहा है?"

मिस्त्री ने तुरंत उठकर जवाब दिया, "मंदिर तो हमारे ही हाथों का कमाल है। एक-एक पत्थर लगाकर हम ही ने इस भवन को खड़ा किया है। देखिए, इसकी दीवारें कितनी मज़बूत हैं। आने वाली कई सदियों के लिए यह आपकी महानता का प्रतीक बना रहेगा।"

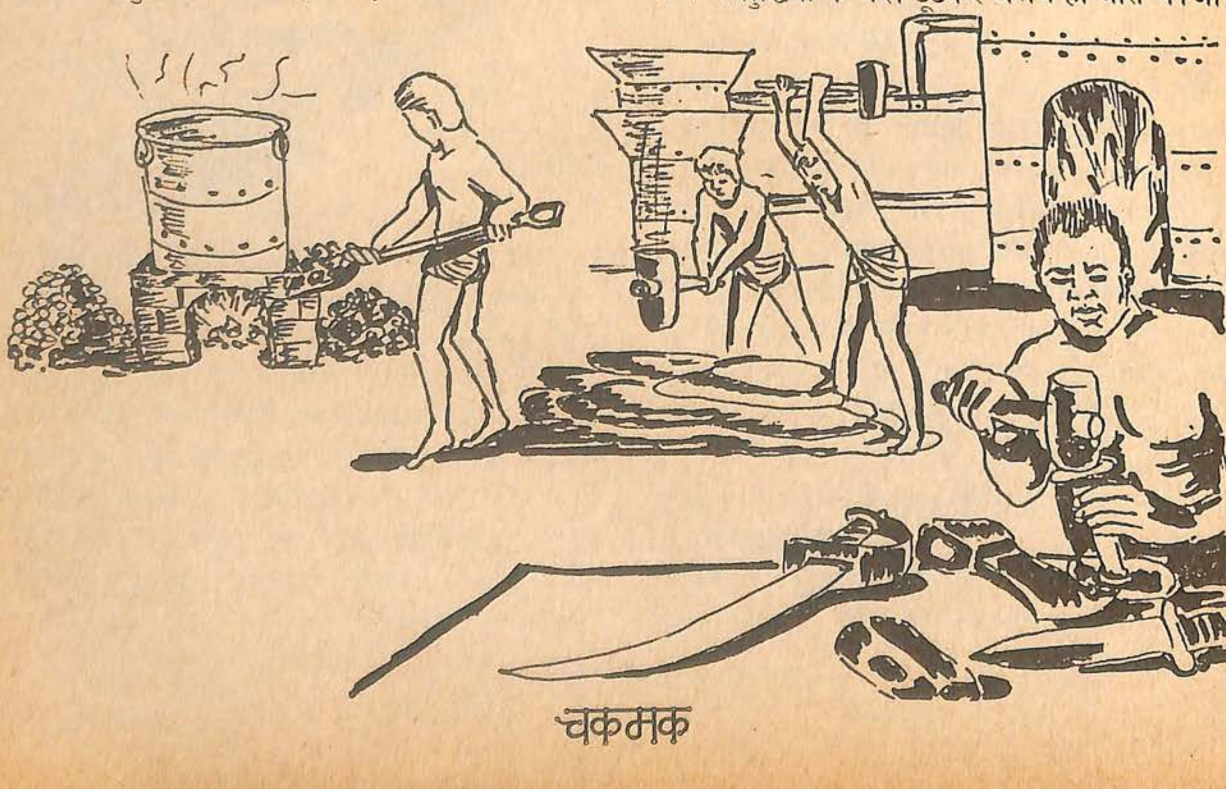
यह सुनते ही बढ़ई ने अपने कौशल की प्रशंसा की और कहा, "केवल दीवारों से ही मंदिर भव्य नहीं हो जाता। लकड़ी की सुंदर चौखटों और दरवाजों के बिना कहां इसका रूप निखर पाता।"

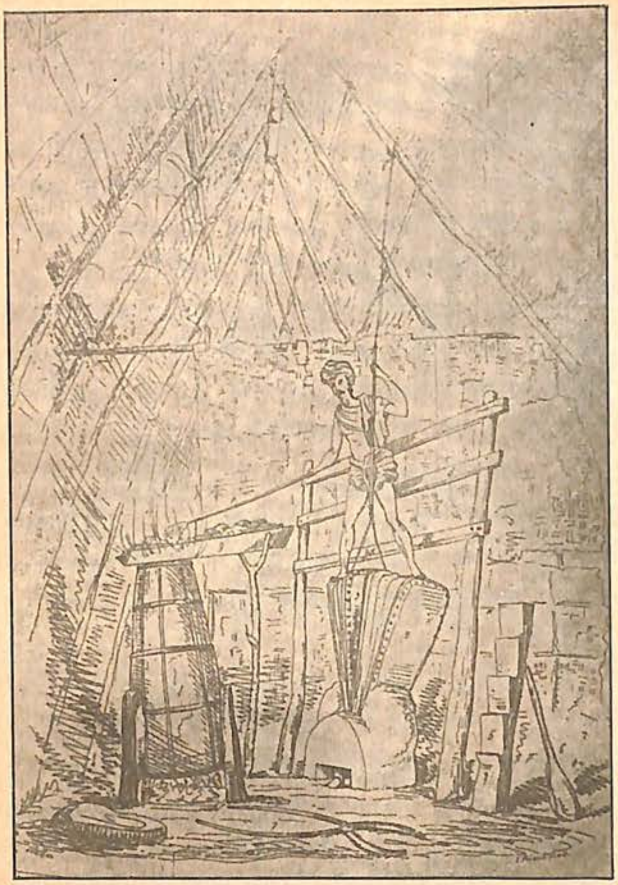
इस पर नींव खोदने वालों ने अपने काम को सबसे महत्वपूर्ण बताया। इन सब बातों को सुनकर राजा सौलोमन ने सभी से एक प्रश्न किया, "आखिर तुम सबके औजार किसने बनाए थे, जिनके आधार पर तुम अपना-अपना कार्य कर पाए?" सभी ने उत्तर में कहा, "लुहार ने।" राजा ने फिर उठकर एक दुबले-पतले से आदमी को सामने किया, जिसका चेहरा अभी भी धुएं के धब्बों से काला था, वह लुहार था। उस लुहार को उन्होंने अपने साथ गद्दी पर बिठाया और एलान किया कि उसे ही मंदिर का प्रमुख निर्माता कहा जाए।

वास्तव में ऐसा हुआ हो इसका कोई ऐतिहासिक सबूत तो नहीं है। पर इस कथा से हम अनुमान अवश्य लगा सकते हैं कि प्राचीन समय से ही लोहे को बहुत महत्व दिया है। माना जाता है कि सबसे पहले जो लोहा मानव के हाथ लगा वह उल्काओं (टूटते तारों) से प्राप्त हुआ होगा। धरती पर हर साल लाखों टन पदार्थ आकाश से उल्का के रूप में गिरता है। ऐसे टूटते तारों में कभी-कभी 90% तक लोहा होता है। इसीलिए इस पदार्थ में पाए जाने वाले लोहे को बिना शुद्ध किए ही उपयोग में लाया जा सकता है। पर किसी के कहने पर तो टूटते तारे गिरते नहीं, और न ही हर जगह पाए जाते हैं।

धरती पर लोहा शुद्ध रूप में नहीं पाया जाता। वह बहुत से दूसरे पदार्थों के साथ मिला हुआ होता है। लोहे के यौगिक जो प्रकृति में मिलते हैं अयस्क कहलाते हैं, और इन्हीं से लोहे को अलग करना पड़ता है। अयस्क से लोहा रासायनिक तरीकों से अलग किया जाता है। अनुमान है कि लगभग चार हजार साल पहले लोहे को शुद्ध करने का पहला तरीका मध्य एशिया में ही अपनाया गया था।

आमतौर पर अयस्क पत्थर के टुकड़ों जैसा ही दिखता है, परंतु हाथ में उठाने पर अयस्क के ढेले पत्थर की अपेक्षा काफी भारी लगते हैं। पहले अयस्क के इन टुकड़ों को लकड़ी के कोयले की आग में गर्म किया जाता था। आग बुझ जाने पर स्पंज (जले हुए कोयले) जैसे लोहे के टुकड़े बचते थे। इन टुकड़ों को फिर से आग में इतना गर्म किया जाता है कि वे लाल हो जाएं। फिर उन्हें हथौड़े से पीटा जाता। ऐसा करते रहने से उनमें बची अन्य अशुद्धियों के अंश टूटकर अलग हो जाते थे। और





कार्बन, जो कि कोयले का प्रमुख हिस्सा है, लोहे के अयस्क के साथ रासायनिक क्रिया करता है। लोहे का अयस्क मुख्यत: लोहे का आक्साइड होता है, जो कार्बन के साथ कार्बन-डाइ-आक्साइड बनाता है। इस प्रक्रिया से अयस्क शुद्ध लोहे में बदलता रहता है। फिर गर्म करके व पीटकर लोहे को मनचाहे आकार में ढाला जा सकता है। आज भी भारत के कई आदिवासी कबीलों में यही प्रक्रिया अपनाई जाती है।

पूर्णत: शुद्ध रूप में लोहा बहुत कम लचीला होता है, इसलिए उसे विभिन्न आकारों में ढालना या उसकी धार बनाना संभव नहीं होता। परंतु लोहे में कुछ कार्बन मिला देने से एक ऐसी मिश्र धातु बन जाती है जिसमें लचीलापन होता है।

लोहे को दहकते लकड़ी के कोयले से गर्म करके पीटने से उसमें कोयले के कार्बन की कुछ मात्रा अपने आप मिल जाती है। हमारे पूर्वज भी इसी तकनीक को अपनाकर कार्बन-युक्त लचीला लोहा पाते थे जिसे आसानी से अन्य आकारों में ढाला जा सकता है।

पिछले दो सौ सालों में लोहे का उपयोग बहुत अधिक हुआ है। लोहे का पहला पुल 1778 में बनाया गया। उसके बाद लोहे के समुद्री जहाज भी बने। लोहे को मजबूत करके उसका इस्तेमाल निर्माण कार्य में करना तो कोई बड़ी बात नहीं थी। परंतु सबसे अधिक परेशानी थी उसे जंग से बचाना। जंग लोहे का ऐसा दुश्मन है जो पूरी तरह से उसको खत्म कर देता है। एक अनुमान के अनुसार 19वीं शताब्दी के दौरान लगभग 17,500 लाख टन लोहे का उत्पादन हुआ, और उन्हीं सौ सालों में

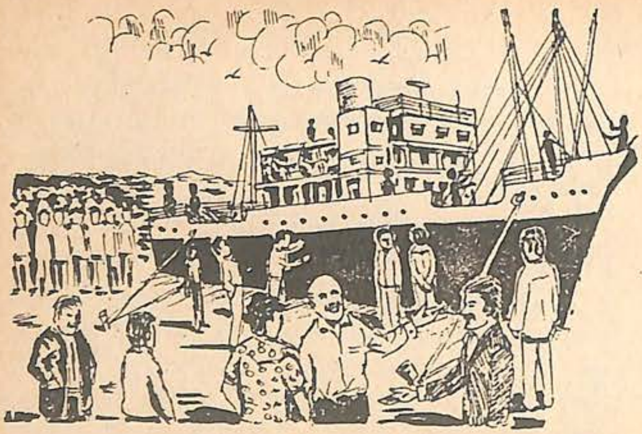
किसमें कितना लोहा?

इस लेख में बताया है, शरीर में लोहे की कमी से सुस्ती, कमजोरी व एनीमिया की बीमारी हो जाती है। खासकर, गर्भवती महिलाओं को खून में लोहे की मात्रा कम होने पर बहुत दुख झेलने पड़ते हैं।

ऐसा माना जाता है कि हमारे दैनिक भोजन में कम से कम 12 मिलीग्राम लोहा होना चाहिए।

हरी पत्तियों की सब्जी में लोहे की मात्रा आमतौर पर अधिक रहती है। नीचे दी गई तालिका में बताया गया है कि किन-किन खाने की चीजों में कितना लोहा पाया जाता है। तालिका में 100 ग्राम खाद्य पदार्थ में जितना लोहा है वह बताया गया है। मिलीग्राम एक ग्राम का 1000 वां हिस्सा है, यानि 1000 मिलीग्राम - 1 ग्राम।

100 ग्राम खाद्य पदार्थ	लोहा (मिलीग्राम)
चावल	2.8
कूटो	15.5
कंगनी	12.9
मुरमुरा	6.6
गेहूं का आटा	11.5
चना	10.2
भिंडी	1.5
चौलाई साग	25.5
सोयाबीन	11.5
चने का साग	23.8
फूल गोभी साग	40.0
अरबी का साग (काला)	38.7
हरा धनिया	18.5
मेथी	16.5
गांठ गोभी का साग	13.3
नीम की पत्ती	25.3
सरसों का साग	16.3
पुदीना	15.6
खापरा साग	38.5
पालक	10.9
मूली का साग	18.0
शलजम का साग	28.4
वेलारी किराई	68.8
मूली	0.4
प्याज	0.7
आलू	0.7
सेम	2.6
करेला	1.8
बैंगन	0.9
गवार फली	4.8
खीरा	1.5



लगभग 7,000 लाख टन लोहा जंग के कारण बरबाद हो गया। इसीलिए लोहे को जंग से बचाने की कोशिश सदियों से होती रही है। खासकर भारत के कारीगर इन तकनीकों में बहुत निपुण थे। लोहे पर तरह-तरह की परत चढ़ाकर उसे बचाया जाता। या फिर लोहे में अन्य तत्व मिलाकर ऐसे यौगिक बनाए जाते, जिन पर जंग नहीं लग पाता। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास स्थित लोह स्तंभ इस कौशल का प्रमुख उदाहरण है। जंग से बचने के लिए 'स्टेनलेस स्टील' मिश्र धातु का उपोग किया जाता है। 'स्टेनलेस' का मतलब जिस पर धब्बे न लगें। इसकी खोज का एक मजेदार किस्सा है। 1917 में एक अंग्रेज वैज्ञानिक बंदूक की नली के लिए सही धातु की खोज में था। इसके लिए वह तरह-तरह की मिश्र धातुएं बना रहा था। अनुपयुक्त मिश्र धातुओं के टुकड़ों को वह कचरे की पेटी में फेंकता जाता था। कुछ महीने बाद जब एक दिन उसकी नजर उस ढेर की तरफ गई तो उसमें उसने एक चमकता हुआ टुकड़ा पाया। बाकी टुकड़ों पर तो जंग लग गया था, पर यह जंग से बचा हुआ था। चमकने वाले मिश्र धातु के टुकड़े में लोहे के साथ क्रोमियम मिलाया गया था। इसे ही स्टेनलेस-स्टील का नाम दिया गया। आजकल तो अनेक प्रकार के स्टील बनाए जाते हैं जिनमें कई तरह के तत्व मिलाकर अलग-अलग गुणधर्म प्राप्त किए जाते हैं।

लोहा बनाना और बने हुए लोहे से विभिन्न चीजें बनाने की परंपरा हमारे देश में बहुत पुरानी है। खासकर, मुगल काल के दस्तावेजों, जैसे आइने अकबरी से इस बात की काफी जानकारी मिलती है।

एक फर्क जरूर था उस समय। पत्थर के कोयले की खानों का पता नहीं था। इसलिए कच्चे कोयले, यानी लकड़ी के कोयले का ही इस्तेमाल किया जाता था। उस समय की लोहा बनाने की एक भट्टी को चित्र में दर्शाया गया है।

वास्तव में ऐसी लगभग 400 साल पुरानी परंपरा अभी भी इस देश में दिखाई देती है। एक तरह के खानाबदोश जिन्हें लोहापीटे कहते हैं अभी भी लोहा बनाने का काम करते हैं। तुमने शायद इनको और इनकी लकड़ी की बनी गाड़ियों को देखा भी होगा। इन्हीं गाड़ियों में यह लोग जगह-जगह जाते हैं और कुछ देर किसी जगह ठहरकर लोहे के अलग-अलग उपकरण बनाकर और बेचकर आगे बढ़ते हैं।

तो भई मानते हो 'लोहे का लोहा!

□ राजेश खिन्दरी
अनीता रामपाल

चित्र: राजेश यादव

पहेलियां

गोरा रंग मगर खट्टा व्यवहार
नमक और चीनी दोनों से प्यार।
दाल-भात, चूड़ा, चावल मेरे यार
मुझसे दूर भगते हैं उदर विकार।।

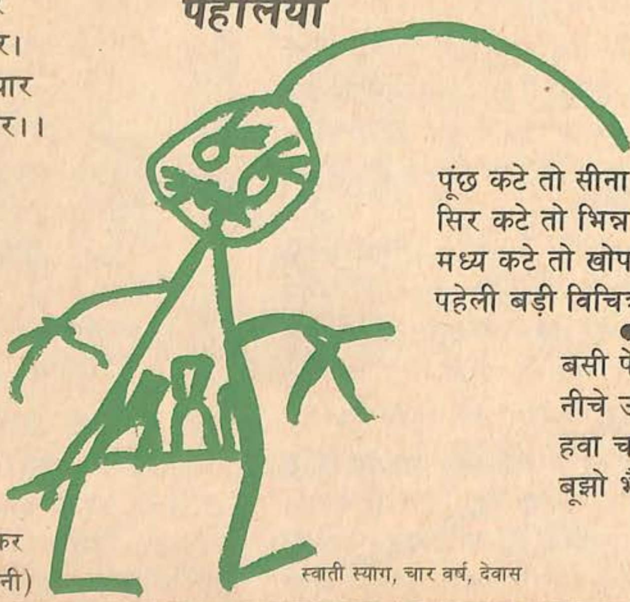
•

छिपी पड़ी रहती है घर में
रंग निखरता है सावन में।
मेरा क्रोध कठिन अंगार
जहां गिरी मैं वहां बंटाधार।।

•

अंदर में तो बहुत कड़ा हूं
खाने में बड़ा मधुर हूं।
भैया मैं गर्मी का मेवा
मुझको धोकर करो कलेवा।।

□ भक्तराज बोरकर
दसवीं, अरी (सिवनी)



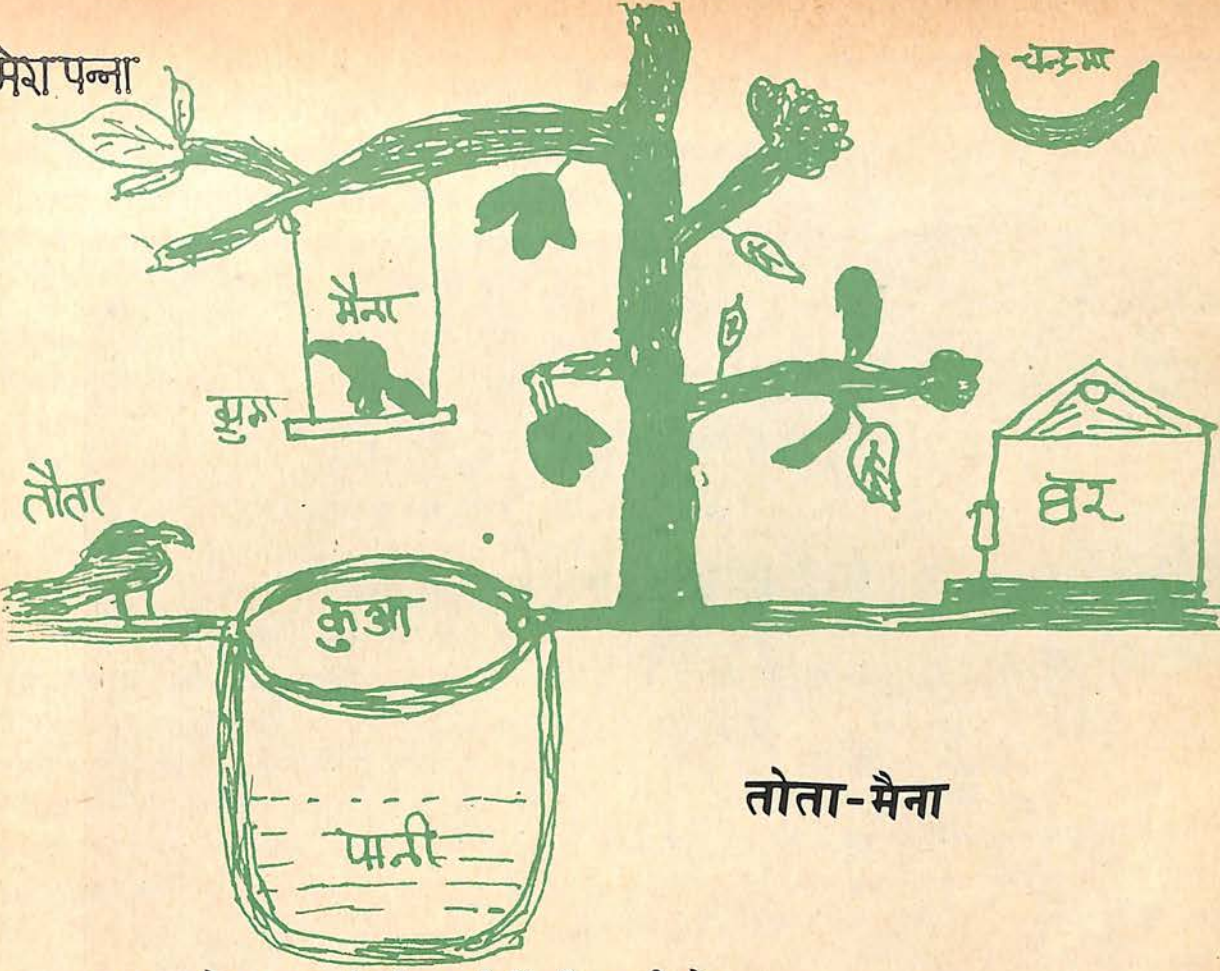
स्वाती स्याग, चार वर्ष, देवास

पूंछ कटे तो सीना
सिर कटे तो भिन्न।
मध्य कटे तो खोपड़ी
पहेली बड़ी विचित्र।।

•

बसी पेड़ पर काशी नगरी
नीचे उसका द्वार।
हवा चलने पर हिलती है
बूझो भैया सार।।

□ रामकुंवर, सातवीं
पिपल्या स्टेशन



तोता-मैना

एक था तोता, एक थी मैना। दोनों पति पत्नी थे।

एक बार तोता मैना से बोला कि चलो हम दोनों झूले में झूलें। उन दोनों ने एक झूला कुएं के ऊपर बांधा। पहले मैना खूब झूली। उसके बाद तोता झूलने लगा, झूलते ही वह झूला टूट गया और तोता कुएं में गिर पड़ा।

मैना रोने लगी और रास्ता चलने वाले का इंतजार करने लगी। उधर से गाय चराने वाला निकला, उसे आवाज देकर बुलाने लगी, गाय वाला दादा रे, गाय वाला दादा रे। थारा जीजा के हेड़ दे (निकाल दे) वह बोला, म्हारी तो गाय जाए।

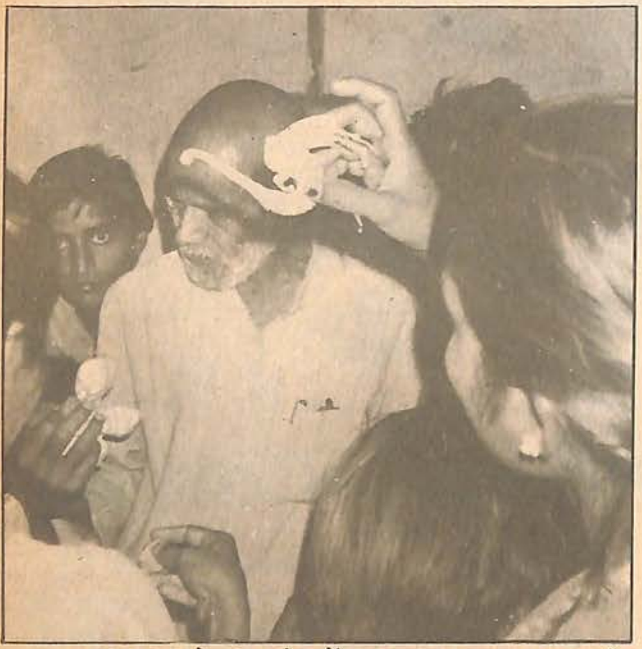
फिर भैंस वाला निकला। उसे आवाज देकर कहने लगी, भैंस वाला जमाई साहब ओ भैंस वाला जमाई साहब तमारा ससुर जी को हेड़ दो। वह बोला म्हारी तो भैंस जाए।

फिर बकरी वाला निकला, उसे भी आवाज देकर कहने लगी। बकरी वाला ससुरा जी तमारा बेटा के हेड़ दो। वह बोला म्हारी तो बकरी जाए।

उसके बाद एक बिल्ली आई। मैना उसे आवाज देकर बुलाने लगी। बिल्ली मौसी ओ बिल्ली मौसी, म्हारा तोता के हेड़ दे।

बिल्ली तोता का नाम सुनकर बहुत खुश हुई और कहने लगी, कि मैं हेड़ तो दूंगी, पर उसे मैं खाऊंगी। मैना ने हां कर ली। बिल्ली कुएं में कूदी और तोते को निकाल लाई। बिल्ली तोते को खाने लगी। मैना ने बिल्ली को अपनी बातों में लगा लिया और मौका देखकर तोता उड़ गया। बिल्ली मुंह लटकाकर अपने रास्ते चली गई।

□ विक्रम सिंह पाटीदार
चांसिया, देवास



चकमक के इस अंक में तुम कुछ अलग प्रकार के रंगीन चित्र देख रहे हो। जरा ध्यान से देखो और वे अलग क्यों हैं यह समझने का प्रयास करो। इनमें भी ऐसी ही कुछ बात है जो तुम 'खेल-खेल में' स्तंभ में देखते-पढ़ते हो।

आम चित्रों की तरह ये रंग और ब्रुश या रंगीन पेंसिल की सहायता से नहीं परंतु ऐसी चीज़ों से बने हैं जो हमारे आसपास के आंगन में, बाग-बगीचों में हमेशा दिखाई देती हैं, जैसे सूखी पत्तियां, फूल, फलियां, गुठलियां आदि; जिन्हें हम बेकार की चीज़ें मानकर उनकी ओर ध्यान नहीं देते। इन्हीं चीज़ों को बटोरकर उनके आकार और रंगों के अनुरूप संवारकर इस ढंग से जमाया या चिपकाया गया है कि चित्र अपने आप ही बन गए।

वैसे जब कोई अजीब सी चीज़ हमें दिखाई देती है तो हमारा ध्यान उसकी ओर जाता ही है, और उसे पाने की इच्छा भी होती है। हममें से कुछ तो उन्हें बटोरकर इकट्ठा भी करते हैं, लेकिन उन्हें व्यवस्थित रूप न दे पाने की हालत में वे केवल अटाला ही बनकर रह जाती हैं।

इन चित्रों को यहां देने का मतलब यही है कि किस प्रकार अटाले से ही चित्र, खिलौने या और भी उपयोगी वस्तुएं तुम खुद बना सकते हो। वैसे तो हरेक के मन में कुछ न कुछ बनाने की, करने की इच्छा स्वाभाविक रूप से होती है, परंतु उचित सामग्री और महंगे साधनों की कमी या उन्हें पाने की सामर्थ्य न होने के कारण निराशा होती है। परंतु निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

अपने आसपास के वातावरण को देखो—प्रकृति ने ढेर सारी सामग्री बिखेर कर रखी है। यह सामग्री दिखाई तो देती है, परंतु देखने का प्रयास कम होता है। दिखाई देना तो एक स्वाभाविक बात है परंतु देखना या निरीक्षण, अवलोकन करने में प्रयास की आवश्यकता होती है (प्रयास, यानी उस चीज़ के नजदीक जाना, उसके सारे पहलुओं से उसे निहारना, टटोलना, उसके साथ खेलना)। इस प्रकार के निरीक्षण, के द्वारा किसी भी चीज़ की विशेषता, उसके गुणधर्म तथा उसकी उपयोगिता समझ में आती है और अपनी मानसिकता या समझ के अनुसार प्रेरणा देती है। और इसी कल्पना की सहायता से निर्माण-सृजन होता है। बड़े-बड़े आविष्कार भी तो ऐसे ही हुए हैं चाहे वह विज्ञान के हों या किसी अन्य विषय से संबंधित।

हम तो चाहते हैं कि तुम भी इस प्रकार अपने आसपास की प्राकृतिक सामग्री इकट्ठा कर कुछ बनाने का प्रयास करो। बाजार के महंगे साधनों पर निर्भर रहने की अपेक्षा यदि अपने आसपास ही सहज रूप से मिलने वाली चीज़ों के साथ खेलो तो तुम्हें एक नई दृष्टि-नजर भी मिल जाएगी और प्रकृति के साथ नया रिश्ता जुड़ जाएगा।

और, यह काम कोई मुश्किल भी नहीं है। तुम्हें जब कभी कोई रंगीन आकर्षक फूल, पंखुड़ी या पत्ती दिखाई दे तो उसे अपनी किताब, कापी या डायरी में दो कागज की परतों में दबाकर रखो। कुछ दिनों बाद वह अपने आप सूख कर आकार बना लेगा। फिर ऐसे बने हुए आकारों की अलग-अलग ढंग से जमावट करते रहो। यह जमावट ही हर बार चित्र बनाती रहेगी। जो जमावट पसंद आए उसे कागज पर लेई, गोंद या फेविकोल से चिपका दो। निरंतर प्रयास करते रहने पर अपने आप कुशलता बढ़ जाएगी।

वैसे कोई कठिनाई आने पर हम भी तुम्हारी सहायता करते रहेंगे।

□ विष्णु चिंचालकर



मकई भुट्टा। देखो किस प्रकार एक ढोल बजाने वाला बन गया। सिंघाड़े के छिलके ने आदिवासी ढंग के मुखौटे का काम कर दिया।

यह दृश्य बना है केवल फटे-पुराने सूखे पत्तों से। देखो, एक खड़ा पत्ता ही अपने आप एक पेड़ का आभास देता है। आसमान में उड़ने वाला पक्षी है लिली का एक सूखा फूल।





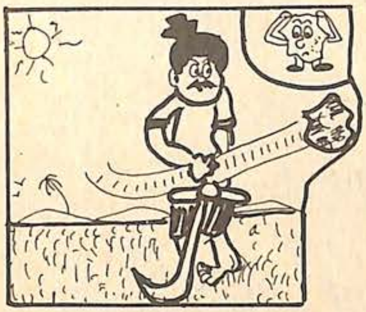


यह छोटा सा परिवार बना है सूबबूल की सूखी फलियों से। फलियों की दोनों परतों की विशेषता समझने का प्रयास करो।

लघु कथाएं

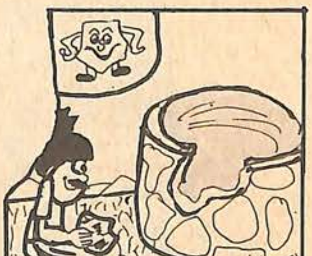
अपना अपना महत्व

किसान को हल चलाते-चलाते झटका लगा। वह झुका देखा पत्थर था। उसने पत्थर बागड़ के पास ले जाकर पटक दिया। वह हल चलाता रहा, पत्थर निकलते रहे और वह उन पत्थरों को बागड़ के किनारे पटकता रहा।



पत्थर ने सोचा कितना उपेक्षित हूं मैं और कितनी महत्वपूर्ण है यह मिट्टी।

किसान ने बुआई शुरू की। फिर जब कई दिनों तक पानी नहीं बरसा, किसान को कुआं खुदवाने की धुन सवार हुई। कुआं खोदा जाने लगा। पत्थर ने देखा खेत में जहां कुआं खोदा जा रहा है वहां से मिट्टी बागड़ के किनारे लाकर फेंकी जा रही है और वहां पड़े पत्थरों को कुएं के पास ले जाया जा रहा है।



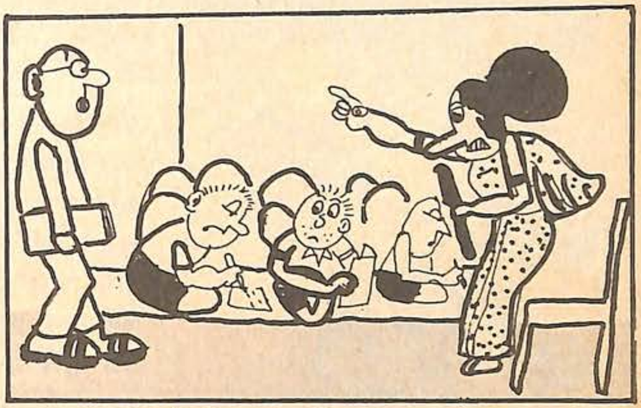
चित्र: शिवेन्द्र पंड्या

देखते ही देखते कुएं के पास पत्थरों का ढेर लग गया और मिट्टी फेंक दी गई खेत के किनारे-किनारे। फिर पत्थर कुएं का निर्माण करने उतर गए खेत के हृदय तक।

सब का अपना-अपना महत्व है किसी का कहीं और किसी का कहीं।

□ राही रोशन

प्यार की भाषा



गर्मी के दिन थे, मैं एक प्राथमिक शाला का आकस्मिक निरीक्षण करने पहुंचा। मुझे प्यास लगी थी। शिक्षिका से मैंने एक गिलास पानी मांगा। शिक्षिका ने एक लड़के को आदेश दिया, "अरे रमेश! जा साहब के लिए एक गिलास पानी ले आ।"

पर बच्चा उठा नहीं और अपने काम में लगा रहा। शिक्षिका ने डांटते हुए फिर कहा, "अरे रमेश तुमने सुना नहीं! मैंने तुमसे पानी के लिए कहा है।" और वे टेबिल पर पड़ी बेंत को उठाकर बड़बड़ाने लगी, "सर क्या करें ये आदिवासी बच्चे बिना छड़ी खाए एक भी बात नहीं सुनते।" तब भी उस बालक ने कोई परवाह नहीं की।

मैंने शिक्षिका के हाथ से छड़ी लेकर अलग रख दी और प्यार से उस लड़के को संबोधित करते हुए कहा, "बेटा रमेश! क्या एक गिलास पानी नहीं पिलाओगे?" वह बालक स्लेट-पेंसिल छोड़कर तुरंत उठा खड़ा हुआ और दौड़कर पानी लेने चला गया!

शिक्षिका अवाक खड़ी मेरा मुंह ताक रही थी। मैं उसे प्यार की भाषा समझाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था।

□ रवीन्द्र कंचन

पहेलियां

?

वन देखा पर मोर नहीं था
बंधते देखा पर चोर नहीं था।
मुंह में देखा पर कौर नहीं था।
बहा खून पर खून नहीं था।

●

हरी टोपी काला बाना
सिर पर बैठ शहर को जाना।
गली-गली में शोर मचाना
अच्छा लगता इसको खाना।।

मेरा पन्ना



गजेन्द्र गुप्ता, आठवीं, पिपरिया



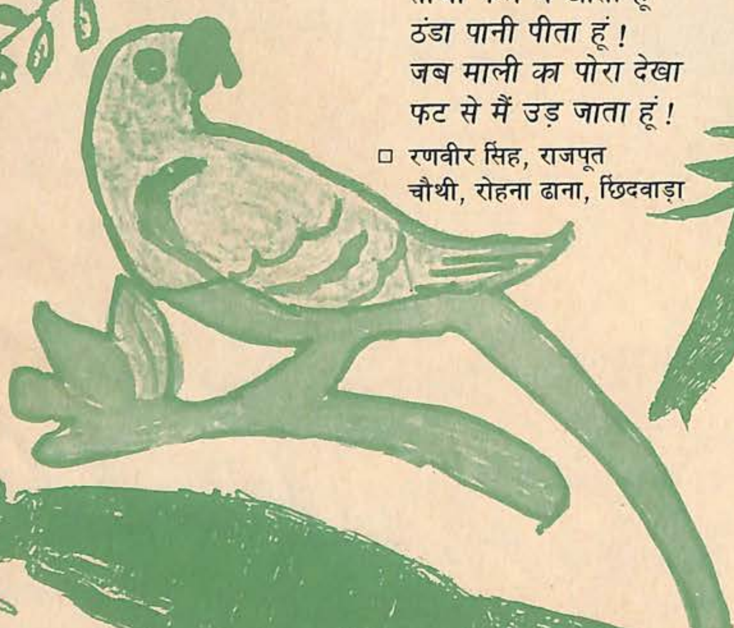
नरेन्द्र सिंह, छठवीं, दोत्र्या, धार

तोता हूं जी तोता हूं
हरी डाल पर बैठा हूं !
लाल मेरी चोंच है
चंचल मेरी चाल है !
ताजा फल मैं खाता हूं
ठंडा पानी पीता हूं !
जब माली का पोरा देखा
फट से मैं उड़ जाता हूं !

□ रणवीर सिंह, राजपूत
चौथी, रोहना ढाना, छिंदवाड़ा



तरुण मिश्रा, छठवीं, चांदामेटा



रितुबाला गुप्ता, छठवीं, उज्जैन



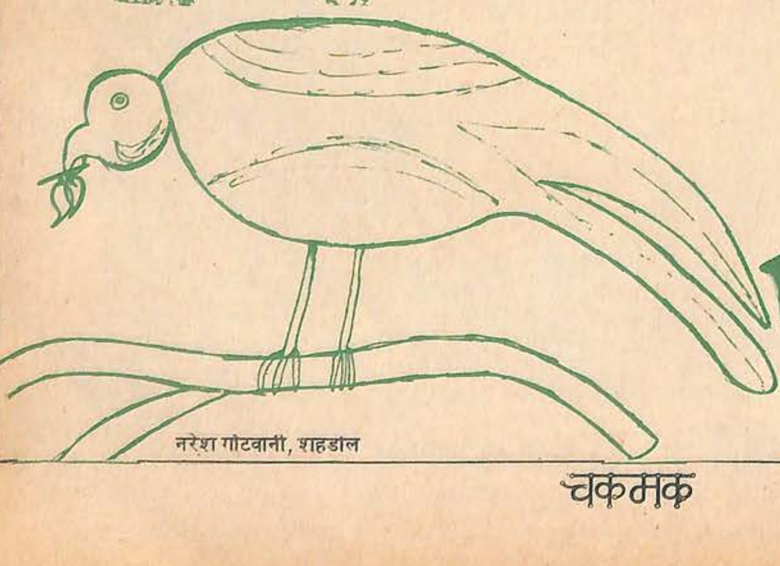
मुकेश पाटीदार, लसुड़िया राठौर मंदसौर

मेरा पन्ना

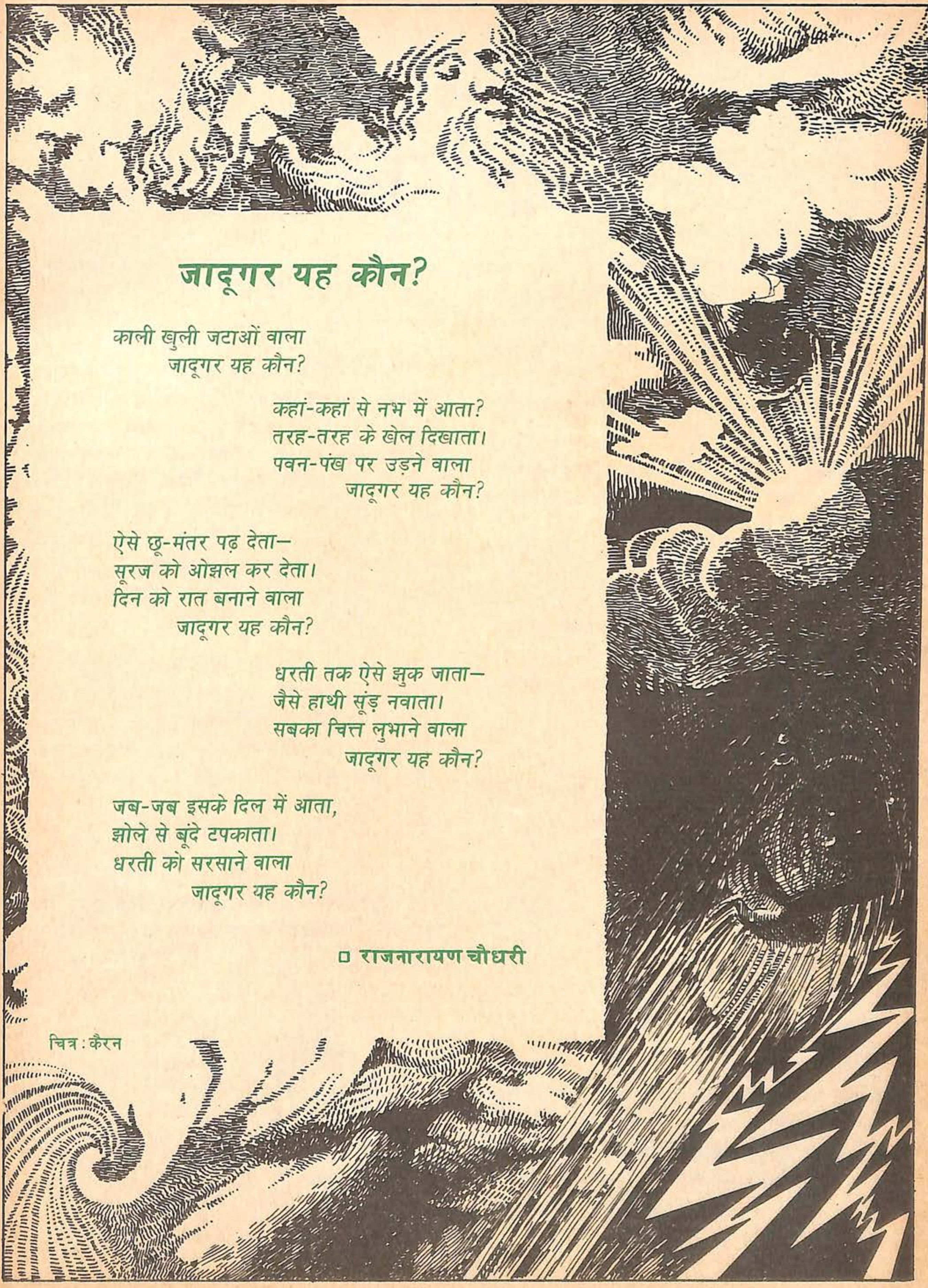


एस. प्रभाकर, जगदलपुर

मेरा पन्ना



नरेश गोटवानी, शहडोल



जादूगर यह कौन?

काली खुली जटाओं वाला
जादूगर यह कौन?

कहां-कहां से नभ में आता?
तरह-तरह के खेल दिखाता।
पवन-पंख पर उड़ने वाला
जादूगर यह कौन?

ऐसे छू-मंतर पढ़ देता—
सूरज को ओझल कर देता।
दिन को रात बनाने वाला
जादूगर यह कौन?

धरती तक ऐसे झुक जाता—
जैसे हाथी सूंड़ नवाता।
सबका चित्त लुभाने वाला
जादूगर यह कौन?

जब-जब इसके दिल में आता,
झोले से बूंदे टपकाता।
धरती को सरसाने वाला
जादूगर यह कौन?

□ राजनारायण चौधरी

चित्र : कैरन



माथापच्ची

(1)

तीन महिलाएं अपनी दो-दो लड़कियों के साथ किसी के घर मिलने गईं। लेकिन उनके यहां सिर्फ सात कुरसियां खाली थीं और सब अकेले-अकेले बैठना चाहती थीं और वे बैठ भी गईं। बताओ यह कैसे संभव हुआ?

□दिनेश गाठिया, हरसूद

(2)

एक व्यक्ति एक लंबी लकड़ी को कुल्हाड़ी के एक वार से दो हिस्सों में काट देता है। अगर वह ऐसे दस बार करे तो उस लकड़ी के कितने टुकड़े होंगे?

(कमलापुर स्कूल से)

(3)

पैदल यात्रा पर निकले तीन पदयात्रियों को एक गांव में अपना खाना बनाने के लिए एक-एक लकड़ी प्राप्त हुई। सब अपना खाना अलग बनाना चाहते थे। सबने अपना खाना अलग बनाया, पर हर एक के चूल्हे में एक नहीं, दो लकड़ियां थीं। यह कैसे संभव है?

(धार से)

(4)

एक षटफलकीय पेंसिल में कुल कितनी सतह होती हैं?

(5)



कमल, अशोक और मोहन तीन दोस्त हैं। चित्र में दिखाए अनुसार तीनों के पास अपना एक मकान और एक बगीचा है। मकान और बगीचे के बीच के रास्ते कुछ इस तरह हैं कि रोज सुबह तीनों आपस में झगड़ पड़ते हैं। क्या तुम तीनों के लिए अलग-अलग ऐसा रास्ता बना सकते हो ताकि उनमें झगड़ा न हो।

(6)

0 से 9 तक के अंकों को ऐसे समीकरण में जमाओ कि उत्तर 1 आए।

(7)

नदी किनारे एक बाग है। इस बाग में अमरूद पके हुए हैं। एक चोर, अमरूद चुराने के लिए चुपके से बाग में घुसता है। वह अमरूद तोड़ लेता है, पर तभी बाग का रखवाला उसे देख लेता है। चोर भागकर नदी में कूद पड़ता है। नदी 64 मीटर चौड़ी है। पहले मिनट में वह 32 मीटर दूरी तक तैर पाता है। दूसरे मिनट में वह 32 मीटर का आधा यानि 16 मीटर तय कर पाता है। इसी तरह नदी पार करने में उसे क्रमशः हर अगली दूरी का आधा समय लगता है। बताओ वह कितने समय में नदी पार करेगा?

(8)

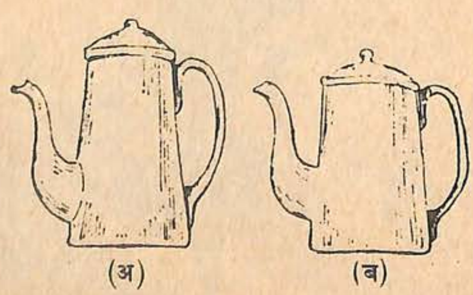
बाजार में संतरों का एक ढेर बिक्री के लिए रखा है। एक खरीददार इस ढेरी से आधे संतरे और एक संतरे का आधा खरीद लेता है। उसी समय एक दूसरा खरीददार आता है और बचे हुए संतरों का आधा ढेर और बचा हुआ आधा संतरा खरीद लेता है। अंत में एक संतरा शेष रह जाता है।

बताओ कुल कितने संतरे बिक्री के लिए रखे गए थे।

(9)

एक हेंडलेंस चीजों को चार गुना बड़ा दिखाता है। यदि हम $1\frac{1}{2}$ डिग्री कोण को इस हेंडलेंस से देखें तो कितना बड़ा कोण दिखेगा?

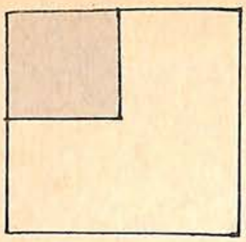
(10)



(अ) (ब)

किस केतली में अधिक पानी भरा जा सकता है?

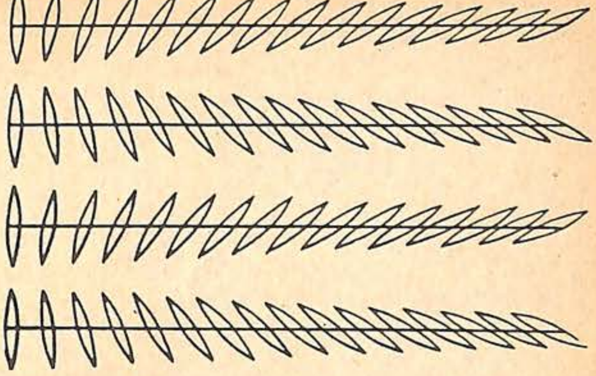
(11)



ऊपर दिखाए वर्ग में खाली हिस्से को चार बराबर हिस्सों में बांटो। पर ध्यान रखो कि हिस्से आकार में भी समान हों।

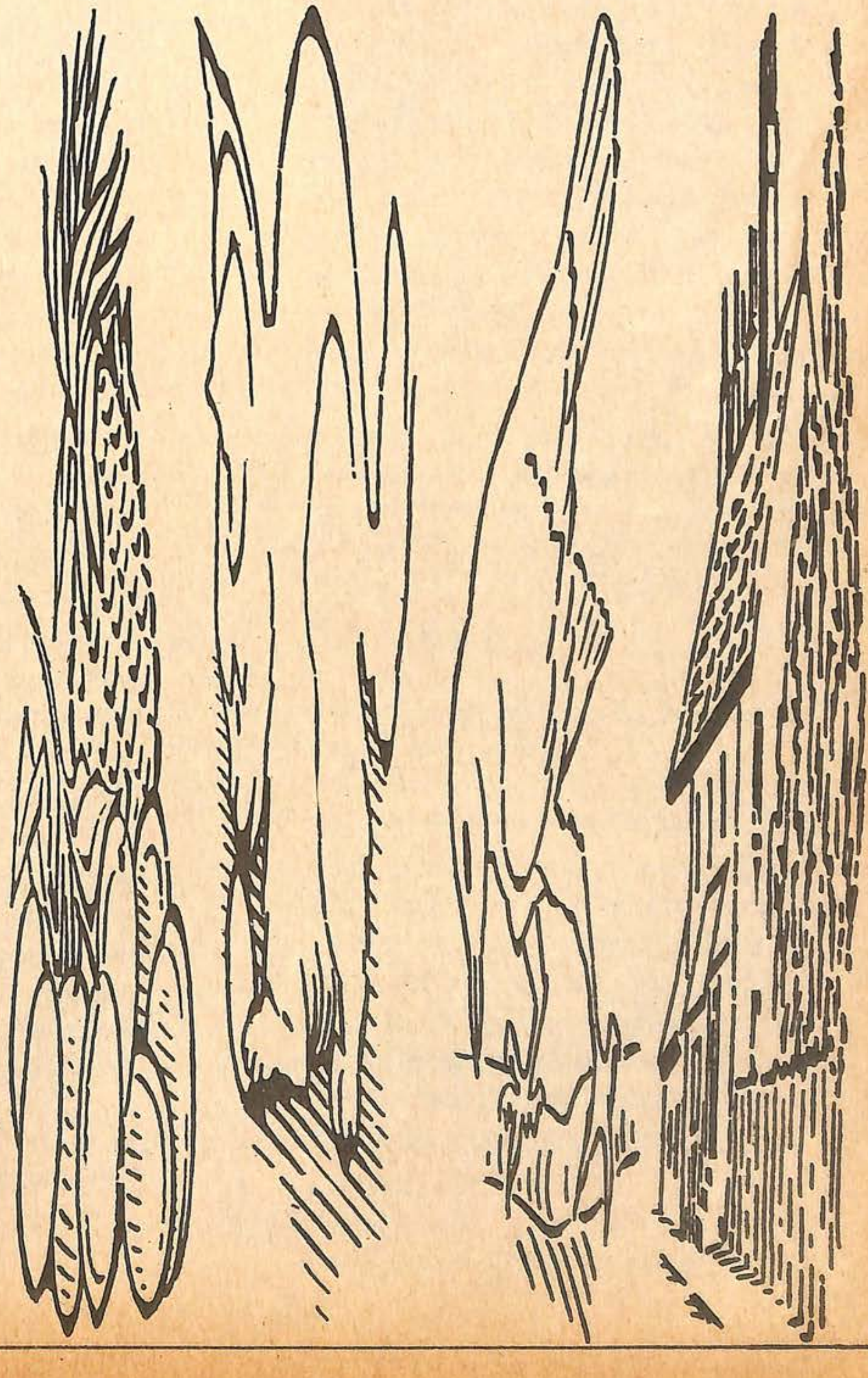
उत्तर जून अंक के : अगस्त अंक में

(12)



आड़ी खिंची रेखाएं समांतर हैं या असमांतर?

(13)

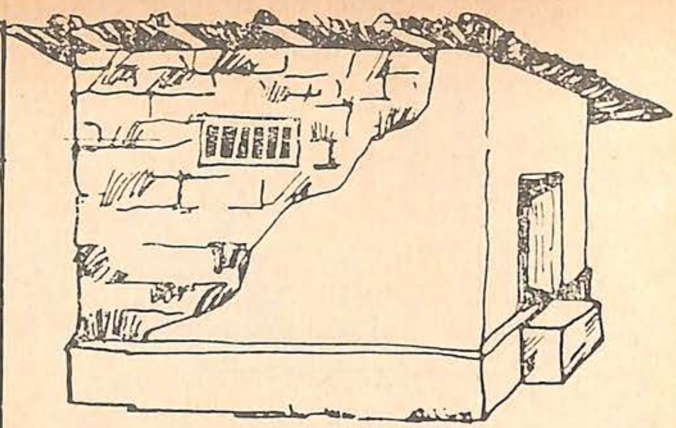


चित्र को ध्यान से देखो। आया कुछ समझ में? हम प्लेट से जिस तरह चाय पीते हैं ठीक उसी तरह चित्र को आड़ा करके फिर से देखो।

जल सह्य

मिट्टी का

पलस्तर



तुम अगर गांव में रहते हो तो जरूर तुमने अपने गांव और आस-पड़ोस में यह बात सुनी और देखी होगी कि बरसात के मौसम में (जब खूब झड़ी लगी हो) यानि सावन-भादों के महिने में किसी पड़ौसी की दीवार ढहकर गिर गई या फिर किसी का समूचा मकान ही गिर गया। असल में दीवारें कच्ची मिट्टी से बनी होती हैं और उनमें पानी से लड़ने की क्षमता नहीं होती है इसलिए पानी की मार के कारण भुरभुरा कर ढह जाती हैं। तुम खुद कल्पना करो, भर बरसात में जब किसी पड़ौसी के साथ यह घटना घटती होगी तब उसके परिवार में कैसी कलह मचती होगी।

गांवों में कच्ची मिट्टी की दीवारों को पानी से बचाने और उन्हें अधिक मजबूत तथा शक्तिशाली बनाने के लिए यहां एक तरीका बता रहे हैं। तुम खुद अगर अपने मकानों की दीवारों की सुरक्षा के लिए कुछ कर पाओ तो अच्छी बात है, पर साथ ही साथ अपने मुहल्ले-पड़ोस के लोगों को जरूर यह सुझाव दे सकते हो।

इस विधि के निम्न तीन प्रमुख चरण हैं, जो इस प्रकार हैं–

(1) सबसे पहले पलस्तर बनाने के लिए ऐसी मिट्टी लो जो न तो ज्यादा चिकनी हो और न ही ज्यादा भुरभुरी। अब मिट्टी में हर घनफुट के हिसाब से लगभग 2 किलो भूसा मिलाओ। मिट्टी और भूसे के इस मिश्रण में आवश्यकतानुसार पानी डालकर मिलाओ। लगभग एक हफ्ते तक रोज इस मिश्रण को दिन में एक बार फावड़े से उलट-पलटकर पैरों से रौंदते रहो ताकि 'गारा' अच्छा मजबूत बन जाए। सप्ताह के अंत में इस गारे से किसी दीवार पर पलस्तर लगाकर देखो। सूखने पर अगर पलस्तर में दरारें नहीं पड़ीं तो गारा तैयार है।

(2) अब दूसरे चरण की तैयारी। लगभग 45 लीटर डामर (तारकोल) लो और उसे गर्म करो। इस गर्म पिघले डामर में लगभग 9 लीटर मिट्टी का तेल उड़ेलकर धीरे-धीरे मिलाओ। इस मिश्रण को तब तक मिलाना होगा जब तक कि डामर और केरोसिन अच्छी तरह न मिल जाएं। यह मिश्रण कट-बैक कहलाता है।

(3) अब आखरी मसाला तैयार करो। प्रति घन फुट गारे में लगभग दो लीटर कट-बैक मिलाओ। फावड़े से इस पलस्तर को अच्छी तरह गूंथो। जल सह्य पलस्तर लगाने के लिए तैयार है।

(4) मिट्टी की दीवार को जल सह्य बनाने के लिए दीवार पर 1.5 से 2 सेंटीमीटर मोटी परत काफी है। पलस्तर लगाने तथा सूखने के बाद थोड़ा सिकुड़ भी सकता है और उसमें दरारें भी पड़ सकती हैं। इन दरारों को दुबारा लेप लगाकर भर दो।

(5) आखिर में दीवारों पर गोबर का लेप पोत दो और लगभग 24 घंटे तक सूखने दो। गोबर का लेप बनाना बहुत आसान है। लगभग 1 भाग गोबर में 1 भाग मिट्टी और 2 लीटर कट-बैक का मिश्रण बनाना होता है।

जल सह्य मिट्टी का पलस्तर बनाने में 15 से 20 पैसे प्रति वर्ग फुट का खर्च आता है।

('ग्राम प्राद्यौगिकी विकास परिषद' के सौजन्य से)

आश्चर्यलोक में एलिस



पिछले अंकों में तुमने पढ़ा

इंग्लैंड के एक हरे–भरे कस्बे में बाहर एलिस खेल रही थी। तभी उसने एक विचित्र खरगोश देखा जो वास्कट पहने अपनी घड़ी को बार–बार देख रहा था। वह जिज्ञासा से खरगोश के पीछे भागी। खरगोश तेजी से बिल में घुस गया, उसके पीछे एलिस भी। एलिस को लगा जैसे वह पृथ्वी के आर–पार बनी किसी सुरंग में गिर रही है और काफी देर बाद उसे ऐसा लगा जैसे वह पुआल के ढेर पर धम्म से गिरी हो। उसने अपने को एक बड़े से हाल में पाया। कुछ अजीब-सी घटनाओं से वह परेशान होकर रोने लगी। कुछ देर बाद उसे लगा कि वह अपने आंसुओं से बनी नदी में भीग रही है। इसी नदी में एलिस की मुलाकात एक चूहे व अन्य जानवरों से हुई।

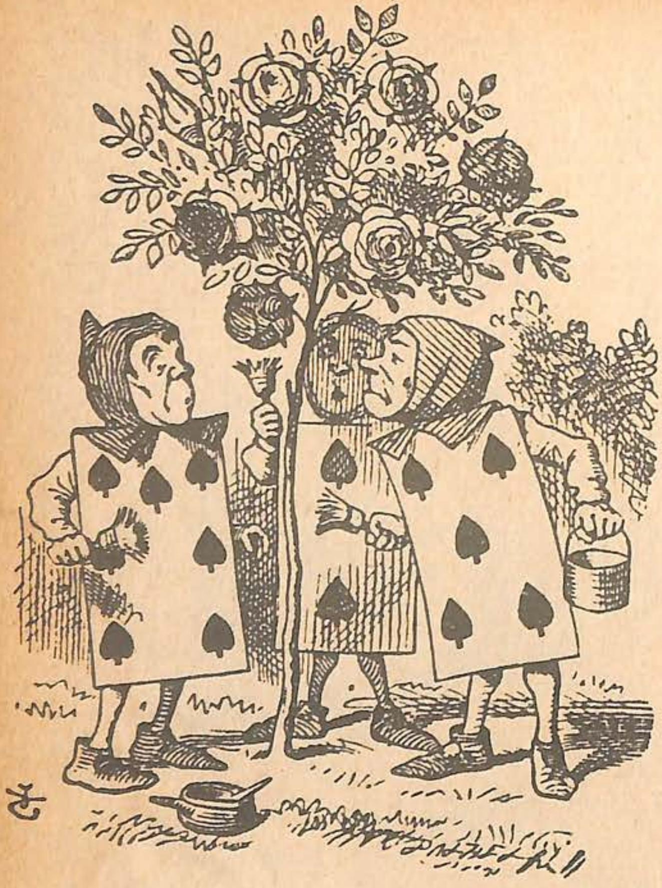
एलिस और अन्य जानवर तथा परिंदे पानी में भींग गए थे। सब ठंड से ठिठुर रहे थे। मूसजी ने इतिहास का एक पाठ पढ़ाना शुरू किया, ताकि सब सूख जाएं। पर ठंड दूर नहीं हुई। डोडो बत्तख ने प्रस्ताव रखा कि सब लोग परिषद् गुट्ट की दौड़ लगाएं। दौड़ के बाद सबको इनाम में टाफी बांटी गई। सबकी फरमाईश पर मूसजी ने एक किस्सा सुनाना शुरू किया। मूसजी बीच में रूठ गए। बातों–बातों में एलिस ने अपनी दीना पूसी का नाम ले दिया। पूसी का नाम सुनकर चिड़ियों में खलबली मच गई और एक–एक करके सब खिसक गए। एलिस ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर कोई न रूका। थोड़ी देर बाद एलिस को किसी के पैरों की आवाज सुनाई दी। उसने देखा वही सफेद खरगोश घबराया हुआ–सा आ रहा है।

खरगोश ने एलिस को मैरी-ऐन समझ लिया और काम करने के लिए आदेश देने लगा। एलिस खरगोश के घर में घुस गई। उसे वहां एक शीशी मिली जिस पर लिखा था 'मुझको पी लो।' एलिस ने जैसे ही उसे पिया, उसका कद बढ़ने लगा। उसने अपना बढ़ता हाथ खिड़की के बाहर निकाल दिया। हाथ देखकर खरगोश तथा अन्य जानवर डर गए। वे उसे घर से बाहर निकालने की कोशिश करने लगे। मौका देखकर एलिस घर से निकल गई। आगे उसकी मुलाकात एक कुत्ते, रेशम के कीड़े तथा कबूतर से हुई। फिर उसे मिले मेंढक अर्दली और मच्छीराम अर्दली। बेगम साहिबा और उनके चेशायर पूस से भी एलिस की मुलाकात हुई। चेशायर पूस ने मार्ची खरगोश और हैट वाले का पता बताया। अब आगे पढ़ो......

एलिस यों ही घूमती-घामती चली जा रही थी कि उसने एक बड़ा भारी पेड़ देखा। उसके पास आकर उसे और भी अचम्भा हुआ, क्योंकि उसने तने में किवाड़ लगे हुए थे।

एलिस ने जरा-सा धक्का देकर अंदर झांका, और फिर फौरन अंदर चली गई।

वहां उसने अपने आपको उसी हाल के अंदर पाया जहां शीशे वाली मेज थी। वह उसने फौरन पहचान ली।



वह छोटा-सा दरवाजा भी उसने देखा, जिसके पार वही लुभावना बाग था, जिसको देखने के लिए एलिस इतनी लालायित थी।

इसके लिए कद को छोटा करना सबसे पहली जरूरत थी। जेब से कुकुरमुत्ते के टुकड़े उसने निकाले, उन्हें खाकर वह फिर नन्ही-मुन्नी-सी हो गई।

अब वह बाग में थी। वहां उसने देखा, तरह-तरह के फूल खिले हुए हैं, रंगों की जैसे नुमाइश हो। और उनके बीच में वह फौवारा। एलिस मारे खुशी के नाच उठी।

इतने में उसने कुछ लोगों की खुसर-पुसर सुनी। आगे बढ़कर देखा तो हैरान रह गई। गुलाब के पौधों के नीचे कुछ ताश के पत्ते-से खड़े थे। कोई सत्ता था, कोई पंजा, कोई तिग्गी। और मजा यह कि उन सब की पीठ भी एक ही छाप की थीं, जैसी ताश के पत्तों की होती है। और उसने क्या देखा कि वे सब के सब जल्दी-जल्दी सफेद गुलाब के फूलों को लाल रंग से रंग रहे हैं। ऐसे माली तो उसने कहीं नहीं देखे थे। कुछ देर वह चुपचाप उनकी बातें सुनती रही, जो इस प्रकार थीं—

दुग्गी—देख मेरे ऊपर रंग मत छिड़क, पंजे भाई!

पंजा—अरे दुग्गी, माफ करना। यह सत्ते ने जरा कुहनी मार दी थी।

सत्ता—हां, हां लगा दो मेरा ही नाम।

पंजा—देख सत्ते, मुंह मत खोल मेरे आगे। कल मलिका महारानी क्या कह रही थीं, याद है? तू बस इसी काबिल है कि तेरी गरदन उड़ा दी जाए!

दुग्गी—क्या कल फिर कोई कसूर किया था इसने? जरा बताओ तो पंजे भाई!

सत्ता—देखो दुग्गी, तुम्हें दूसरों के मामलों में पड़ने का कोई अधिकार नहीं।

पंजा— क्यों नहीं, हजार बार है। लो, मैं बताता हूं। कल इनसे बावर्ची ने मंगाया प्याज, ये ले आए चुकंदर!

एलिस से चुप खड़े न रहा गया। आगे बढ़कर बोली, "अरे भाई, यह बताओ, तुम इन सफेद गुलाबों को लाल रंग से क्यों रंगे जा रहे हो?"

उनमें आपस में खुसर-पुसर होने लगी। फिर एक बोला, "बात यह है, बात यह है मिस साहब, कि हमसे कहा गया था लगाने को लाल गुलाब, हम लगा गए सफेद। अब मलिका महारानी देखेंगी, तो बस समझ लीजिए, हमारी गरदनों की खैर नहीं।"

उसी समय बाजे-गाजे की आवाज एलिस के कानों में पड़ी, जैसे कोई जुलूस इसी ओर आ रहा हो।

पंजे ने फौरन कहा, "अरे वह देखो, वह देखो! मलिका महारानी की सवारी आ रही है। सब जल्दी-जल्दी औंधे लेट जाओ भाई!"

एलिस ने देखा कि सब के सब औंधे होकर रास्ते के दोनों तरफ लेट गए। जुलूस का शोर ओर भी नजदीक आ गया।

एलिस ने कहा, 'हाय' बिलकुल उलटे पड़े हुए ताश के पत्ते जैसे लग रहे हैं, बेचारे।' फिर मन में सोचने लगी, क्या बादशाहों की सवारी के वक्त औंधे मुंह पड़ने का कोई कायदा है? मैं तो नहीं पड़ती औंधी! मैं तो देखूंगी अच्छी तरह जुलूस को!'

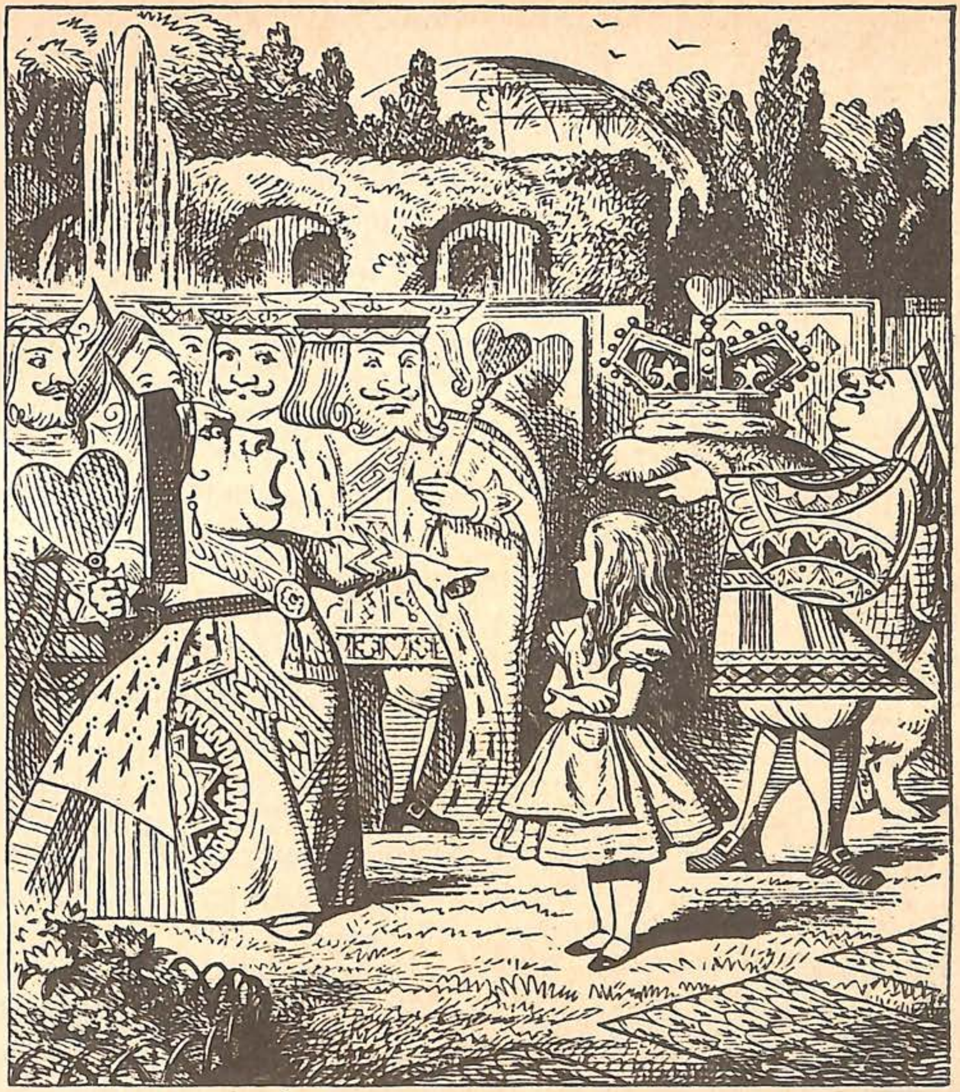
अब जुलूस बिलकुल उसके सामने से गुजर रहा था। आगे-आगे बैंड बजता जा रहा था। उसके पीछे खूबसूरत वर्दी में बल्लमबर्दार आए। ये भी बिलकुल ताश के पत्ते जैसे थे। इनके पीछे दरबारी लोग और अमीर-उमरा। सब बड़े जुर्क-वर्क कपड़े पहने हुए थे।.... और फिर तभी एलिस के कान में बच्चों की चहकती हुई आवाजें पड़ीं। देखा, तो छोटे-छोटे बच्चे चमकते हुए रंग बिरंगे कपड़े पहने, हंसते-कूदते चले आ रहे थे। एलिस ने उनकी कुछ बातें भी सुनीं, जो वे आपस में करते चले आ रहे थे।

-ईला, देखो, मेरी जरी की टोपी ठीक रखी हुई है न?

-और मेरा हीरे-मोती का मुकुट?

-ठीक है, सुनहरी बालों में खूब चमक रहा है!

-देखो मेरी माला, कल मार्था ने मुझे इनाम में दी थी



-और बॉबी, अपनी नन्ही सी तलवार तो दिखाना!....
तुम इतने में मेरी देख लो!
-नहीं दिखाते!
-मेरी! मेरी!
-मार्गरिट! ...
धीरे-धीरे बच्चों का जुलूस भी निकल गया।
एलिस के मुंह से निकला, 'हाय, कैसे प्यारे बच्चे हैं! जी करता है इन्हीं के साथ मैं भी खेलती हुई चलूं! सब महल के बच्चे हैं। कैसे प्यारे-प्यारे!

फिर नवाब और राज-महाराजे आए। उनकी दबी हुई हंसी, खांसने और गुप-चुप बात करने का गम्भीर ढंग अजीब-सा लगा एलिस को। साथ-साथ उनकी बेगमें और रानियां भी थीं। सब के सर पर ताज थे। इतने हीरे-जवाहरात इन लोगों ने पहन रखे थे कि एलिस की आंखें चकाचौंध हो गईं। बेगमों से तो मारे नजाकत के चला ही नहीं जा रहा था। उनको देख-देखकर एलिस मन ही मन खूब हंसी।

फिर इन सबके पीछे उसने देखा ... पान का गुलाम ही तो था वह। लाल मखमल के गद्दे पर पान के बादशाह का ताज लिए आ रहा था। 'ओफ्फोह!' एलिस ने कहा, 'कितना बड़ा ताज है!'

पीछे-पीछे एक भीड़ जय-जयकार करती आ रही थी- "मलिका महारानी की जय! बादशाह सलामत की जय!"

'अच्छा ये हैं मलिका महारानी!' एलिस ने आप ही आप कहा। 'ये हैं पान की मलिका महारानी! पान के बादशाह के साथ! कैसे गरूर में हैं! भवें तनीं हुई!'

मलिका ने एकाएक गुलाम से पूछा, "गुलाम, यह कौन लड़की हमारे रास्ते में खड़ी है?"

गुलाम—हुजूर सलामत, कुछ पता नहीं।

मलिका बोली, "बेवकूफ!" फिर उसने खुद एलिस से पूछा, "बच्ची, तुम्हारा नाम क्या है?"

एलिस ने कहा, "हुजूर पान की मलिका, मेरा नाम एलिस है।" अपने दिल में उसने कहा, 'अरे ये सब ताश

के पत्ते ही तो हैं आखिर! इनसे डरना क्या? हां जी!'

मलिका—और ये औंधे मुंह कौन लोग पड़े हुए हैं?

एलिस—ये? मुझे क्या मालूम! क्या मेरा काम है यह सब जानना?

मलिका—(तैश में आकर)- यह गुस्ताखी हमारी शान में! नादान लड़की! ले जाओ इसको... उड़ा दो इसका सर!

एलिस ने फौरन जोर से और निश्चयात्मक स्वर में कहा "क्या वाहियात बात है!"

बादशाह—प्यारी मलिका, जरा ख्याल तो करो। अभी बच्ची ही तो है।

मलिका—अच्छा, बस रहने दो। गुलाम, जरा उलटा करके देखो, कौन हैं ये लोग जो औंधे पड़े हुए हैं।

गुलाम ने जाकर तीन आदमियों को जो सामने थे, उलटा कर दिया। फिर जोर से कहा, "हुजूर मलिका सलामत, दुग्गी, पंजा, सत्ता!"

ये तीनों मलिका के सामने हाथ बांधकर खड़े हो गए।

मलिका ने कड़ककर पूछा, "क्या बात है?"

तीनों हाथ उठाकर चिल्लाकर बोले-

"हुजूर मलका महारानी का इकबाल रहे!"

"हुजूर बादशाह सलामत का इकबाल रहे!"

"हुजूर पान के गुलाम साहब बने रहें!"

"हुजूर, मिस साहब....हुजूर...."

मलिका बोली, "बस, बंद करो बकवास। बात क्या है बताओ!"

तीनों में से एक थोड़ी सी खुसर-पुसर के बाद बोला, "हुजूर जानबख्शी हो! गलती हुई! ये गुलाब के फूल हुजूर,लाल लगाने का हुक्म था, मगर..."

मलिका—अच्छा, हम समझ गए। काम चोर, हरामखोर कहीं के! ले जाओ इनको, उड़ा दो गरदनें इनकी!... चलो, गुलाम! जुलूस से कहो, आगे बढ़े।

तीनों गिड़गिड़ाकर रोने लगे, "हुजूर मिस साहब, बचाइए!"

जब मलिका महारानी आगे बढ़ गई, तो एलिस ने चुपके से उन्हें समझाते हुए कहा, "देखो, वे सिपाही आ रहे हैं। जल्दी से इधर इन गमलों के अंदर छिप जाओ। बस, ऊपर से ये पत्ते डाल लो।"

उन्होंने ऐसा ही किया।

सिपाही उन्हें खोजने-ढूंढ़ने लगे।

"कहां गए तीनों? अभी यहीं पर तो थे," एक बोला।

"इधर देखो इधर!" दूसरा बोला, "कहीं उधर न हों- गुलाब के पौधों के पीछे।" उन्होंने ढूंढ़ा, मगर बेकार! हारकर बोले, "कहीं नहीं हैं। अरे चलो, अब वे मिलेंगे नहीं। जुलूस बहुत दूर निकल गया है। इनका मिलना असम्भव है।" और वे चले गए।

सिपाही मलिका के पास पहुंचे तो मलिका ने चिल्लाकर पूछा, "सर उड़ा दिए उनके?"

सिपाही—हुजूर के इकबाल से तीनों उड़ गए!

मलिका—अच्छा, अच्छा!

मलिका ने एलिस को पास खड़े देखा तो उससे बोली, एलिस, तुम भी यहां मैदान में आ गईं! अच्छा। तुम्हें कड़की खेलना आता है?"

एलिस—जी, जरूर आता है।

मलिका—बहुत ठीक! आओ हमारे साथ। फिर उसने चिल्लाकर हुक्म दिया, "आओ सब लोग इस कड़की के मैदान में और अपने-अपने सारस के बल्ले और बिज्जुओं के गेंद ले लो! और ये सिपाही हर एक के लिए गोल बन जाएं—फौरन से पेश्तर।"

मैदान में खेल शुरू हो गया।

एक ने खुशी से चिल्लाकर कहा, "वह गया मेरा बिज्जू गोल के पार!" दूसरा खीझकर बोला, "यह सारस का बच्चा फिर टेढ़ा हो गया।"

एक पूछ रहा था, "कहां है- तुम्हारा बॉल कहां है?" दूसरा जवाब दे रहा था, "इस ऊबड़-खाबड़ मैदान में कुछ पता नहीं चलता, किधर रेंग गया।"

कोई कह रहा था, "नवाब साहब की पाली नही



थी, मेरी थी।''

''नहीं, मेरी थी रानी साहिब!''

एक ने झल्लाकर कहा, ''कहां गए ये सिपाही, गोल बनाकर अपनी जगह पर खड़े नहीं रहते!''

मलिका ने फौरन हुक्म लगाया, ''उड़ा दो उनका सर!''

उधर एक खिलाड़ी दूसरे से कह रहा था, ''यह बिज्जू बॉल मेरा नहीं है। वह भागा जा रहा है तुम्हारा सारस-बल्ला। पकड़ो-पकड़ो।''

मलिका कहीं फिर चिल्लाई ''उड़ा दो सर उनका!''

एलिस को यह खेल बड़ा मुश्किल मालूम हुआ। बॉल, बल्ला, गोल के घेरे, सभी तो जिंदा ठहरे। और फिर उसका सारस न जाने क्यों बार-बार गरदन टेढ़ी कर लेता और चोंच उठाकर मुंह देखने लगता। और इस सब घपले में यह भी पता नहीं चलता था कि किसकी पाली है। इस पर भी तो दसियों की गरदन उड़ाने का हुक्म हो चुका था।

एकाएक चौंककर एलिस ने कहा, ''ओह, यह मेरे सामने हवा में किसके दांत-से झलक रहे हैं! हो न हो, चेशायर पूस है जो बहुत धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है!''

चेशायर पूस—कहो, कैसा खेल चल रहा है, एलिस बीबी?

एलिस ने सोचा कि जरा उसकी दोनों आंखें साफ-साफ दिखाई देने लगें, या कम से कम एक कान तो नजर आ जाए, तब जवाब दूं। आखिर सुनेगा कैसे? जब शक्ल कुछ कुछ पूरी हो गई, तो वह बोली, ''भई पूस, बहुत मुसीबत है! क्या नियम हैं, क्या कायदे हैं, कुछ पता नहीं चलता। सब चीजें जिंदा हैं— बॉल, बल्ला, गोल—सब। और वे अपना-अपना रस्ता लेती हैं, और हम टापते रह जाते हैं। अभी मैंने मलिका के बिज्जू बॉल को अपने बिज्जू से मारकर हराया होता। मगर वह मेरे बिज्जू को देखते ही उलटे पांव भागा। अब बताओ!''

चेशायर पूस—तुम्हें मलिका कैसी लगती हैं?

एलिस—बहुत खराब! वह इतनी गरम मिजाज हैं...

चेशायर पूस ने बीच में ही टोककर धीरे से कहा, ''श्श्श! मलिका बिलकुल तुम्हारे पीछे ही आ रही हैं।''

एलिस ने झट बात का रुख बदलकर कहा, ''हां इतनी तेज हैं, कि उन्हें कोई नहीं हरा सकता। आखिर में वही जीतेंगी!''

मलिका, ''अच्छा, अच्छा! मैं सब सुन रही हूं!'' फिर पुकारती हुई दूर निकल गई, ''मेरे गोल वाले सिपाही किधर गए? जो एक मिनट में हाजिर नहीं होते बस, उड़ा दो उनका सर!''

एलिस ने अपनी बाईं तरफ मुड़कर देखा तो बादशाह भी पास ही खड़े थे।

बादशाह—एलिस!

एलिस—जी बादशाह सलामत!

बादशाह—यह कौन है? तुम किससे बातें कर रही हो?

एलिस—जी, बादशाह सलामत, यह मेरा दोस्त, चेशायर पूस है। आप इससे मिलकर खुश होंगे। चाहें तो...

बादशाह—नहीं, नहीं, हमें पसंद नहीं इसकी सूरत। हां, यह चाहे तो हमारे पवित्र हाथ को झुककर चूम सकता है।

चेशायर पूस—मैं तो कभी न झुककर इसका हाथ चूमूं।

बादशाह—एं! इतना गुस्ताख! हमें इसकी शक्ल तक देखना गवारा नहीं। कैसी आंखें निकालकर देख रहा है हमारी तरफ!

एलिस—मगर मैंने तो कहीं पढ़ा है कि बिल्लियां बादशाहों से आंखें मिला सकती हैं।





बादशाह बोला, "यह सब हम नहीं जानते। इसको यहां से हटाना होगा।" फिर उसने मलिका को पुकारा, "मलिका! प्यारी मलिका! जरा इस बिल्ले को यहां से हटाने का इंतजाम तो करो! प्यारी मलिका।"

मलिका ने दूर से कहा, "हम अभी आते हैं।" फिर नजदीक आकर चिल्लाई, "कोई है? उड़ा दो इसका सर!"

बादशाह—अजी मैं खुद जाता हूं शाही जल्लाद को बुलाने!

मलिका ने बहुत तेज आवाज में कहा, "कहां गए हैं सब लोग खेल छोड़-छोड़कर? सबके सर उड़ाए जाएंगे!" जैसे एक भगदड़ सी मच गई कुछ लोग दौड़े हुए आए! "गुलाम किधर गया?" मलिका चिल्लाई।

गुलाम—हुजूर मलिका महारानी, गुलाम यह हाजिर है।

मलिका—कहां गए सब के सब?

गुलाम—हुजूर, पांच आदमियों को छोड़कर सब कैद हो गए हैं। सबके सर उड़ेंगे?

मलिका—जल्लाद! कहां है जल्लाद?

जल्लाद—हुजूर मलिका महारानी का इकबाल है। जल्लाद हाजिर।

बादशाह—जल्लाद, यह ऊपर चेशायर पूस का मुंह देख रहे हो? कैसा दांत निकाले हंस रहा है!

मलिका—देख क्या रहे हो, फौरन उड़ा दो सर।

जल्लाद—हुजूर, बंदा हुकुम की तामील के लिए हाजिर है। मगर, हुजूर उसका धड़ नजर नही आता। सर को कहां से उड़ाया जाए?

बादशाह— बेवकूफ। जब सर सामने मौजूद है, तब उसको उड़ाने में देर किस बात की !

मलिका— अगर फौरन से पेश्तर और पेश्तर से पहले इस चेशायर पूस का सर नहीं उड़ाया जाता, तो याद रखो, सबके सर अभी उड़ाए जाएंगे।

यह सुनते ही जो लोग मौजूद थे, उनमें खलबली-सी मच गई।

कोई कह रहा था, "हाय, हाय, अब तो हमारी भी जान गई !"

किसी ने राय दी कि "कुछ न कुछ इंतज़ाम अब जल्दी ही होना चाहिए।

एक ने कहा, "इस जल्लाद को क्या हो गया है ! इसकी समझ में ही नहीं आता।"

कई लोग बोले, "हाय, हाय, अब हम भी मारे गए।"

एलिस ने आगे बढ़कर कहा, "देखिए, हुजूर

मलिका, यह पूस तो बेगम का है न ? क्यों न उनसे भी सलाह ले ली जाए इस मामले में !"

मलिका— हां, हां, हां। बेगम हमारी कैद में हैं। गुलाम, जाओ ! फ़ौरन उनको कैद से रिहा करके अपने साथ लाओ !

यहां यही सब तदबीरें हो रही थीं, उधर चेशायर पूस धीरे-धीरे हवा में गायब होने लगा।

एलिस ने मन ही मन खुश होकर कहा, 'लो, अब उड़ाओ सर ! वह धीरे-धीरे गायब भी हो रहा है। कान तो हवा हो गए। आंखों की चमक भी मिट-सी गई। लो, अब बस खुले हुए दांतों की हंसी-सी हवा में रह गई है। अरे, लो, वह भी जा रही है !लो, वह गई .... गई।'

बादशाह चिल्लाया, "पकड़ो, पकड़ो, पकड़ो उसको !"

जल्लाद— कहां गया मरदूद का चेहरा ! देखो, भीड़ के उधर न हो !

मलिका— उधर कहां। पेड़ों में होगा। सिपाहियों, दौड़ो, ढूंढो ! नहीं तो, किसी की खैर नहीं।

एलिस मुंह फेरकर हंसने लगी। आप ही आप धीरे से बोली, 'क्या खूब मज़ा आया। चेशायर पूस मेरा दोस्त है। उसको कोई नहीं मार सकता। कैसे मजे से हंसता हुआ वह सबकी आंखों के सामने से ग़ायब हो ग़या !'

इतने में बेगम भी आ गईं, पान के गुलाम की हिरासत में।

बेगम ने दूर से ही झुककर कहा, "हुजुर मलिका महारानी,सलामत! आज का खेल का दिन मुबारक हो!"

मलिका— बेगम ! ... अब फिर तुमको सजा दी जाती है। फिर तुमने ... अब फिर देरी की। अब तुम आई हो जब तुम्हारा जंगली पूस गायब भी हो गया। फ़ौरन से पेश्तर और पेश्तर से पहले अगर तुम्हारा चेशायर पूस हमारे दरबार में हाजिर नहीं किया जाता, तो याद रखो, बेगम, तुम दोनों के सर एक साथ उड़ा दिए जाएंगे !

बेगम— जो हुक्म मलिका महारानी का !

मलिका— जाओ, अब हम आज का खेल खत्म करते हैं।

बादशाह— गुलाम, अगर पूस मिल जाता है, तो हम सबकी जान बख्शी करते हैं।

एलिस के मुंह से आप ही आप धीरे से निकल गया, 'बादशाह बहुत अच्छे हैं।'

मलिका ने कहीं सुन लिया। बोली, "एलिस, हम भी बहुत रहमदिल हैं। ... आज हम तुमको एक महाकच्छ दिखाएंगे।"

एलिस को नहीं मालूम था, वह इतनी पास खड़ी होंगी। उसने पूछा, "यह कौन-सा जानवर है ?"

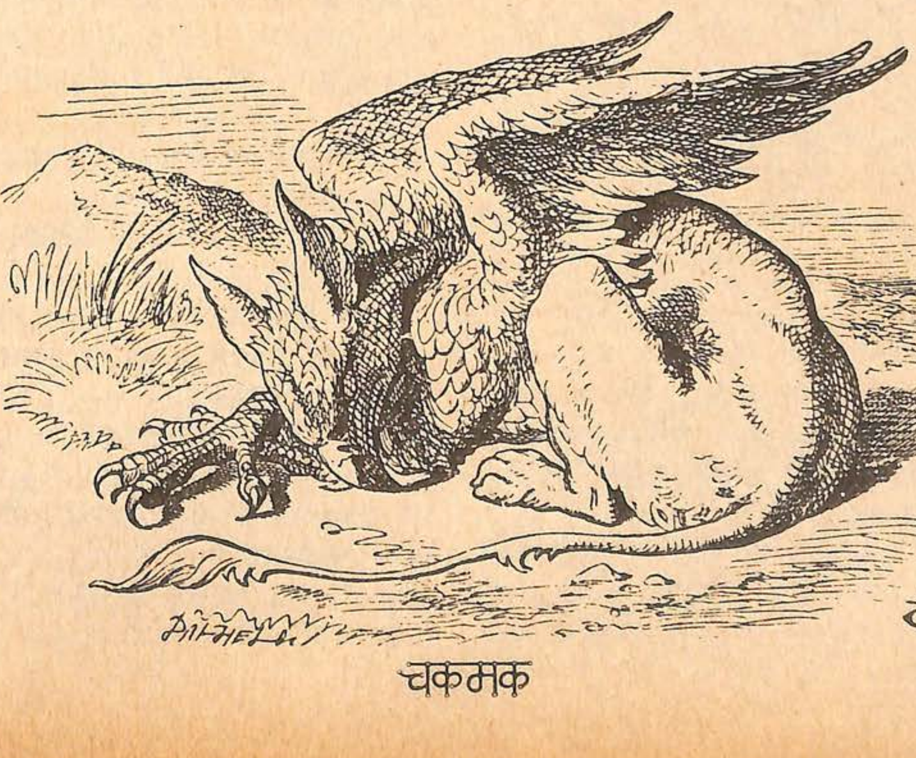
मलिका ने कहा, "यह एक बहुत ही बना हुआ बड़ा भारी कछुआ है। ... वह दूर पर देखो ..." उसने एक तरफ़ इशारा करके बताया, "वह उधर देखो, कौन पड़ा हुआ है ?"

एलिस— वह जो धूप में सो रहा है? बड़े-बड़े पंख हैं और बड़ी सी चोंच, मगर पीछे शेर का सा धड़ है।

मलिका— हां, वही। वह है ग्रिफिन।

एलिस— ग्रिफिन ? मैं तो समझती थी कि यह कहानी की किताबों में ही पाया जाता है। मगर यहां तो सचमुच का मौजूद है।

एलिस को उसे देखने की बड़ी उत्सुकता हुई। दोनों



बातें करती हुईं थोड़ी देर में उसके पास पहुंच गईं। तब मलिका ने कहा, ''लो अब इससे बात करो।'' ग्रिफिन से बोली, ''उठ अहदी कहीं के ! पर झाड़ अपने ! ज़रा आंख खोलके देख, कौन खड़ा है तेरे सामने !''

ग्रिफिन— हुजूर पान की मलिका ... और ...

मलिका— यह एलिस; हमारी मेहमान हैं। जाओ और बने हुए महाकच्छ से इनकी मुलाकात कराओ ! ये उनकी पूरी कहानी सुनेंगी, और उसका नाच भी देखना चाहती हैं।

ग्रिफिन— जो हुक्म, मलिका सलामत !

मलिका— अच्छा एलिस, मुझको अभी जाकर कुछ बड़े कैदियों को सज़ाएं देनी हैं। अब हम तुमसे दरबार में मिलेंगे।

एलिस— बहुत धन्यवाद !

जब मलिका चली गई, तो ग्रिफिन ने आहिस्ता से कहा, ''यह भी क्या मज़ाक है ?''

एलिस— मज़ाक क्या !

ग्रिफिन ने 'किर्रर' की-सी आवाज़ की, फिर हंसा और बोला, ''मज़ाक ! यही, पान की मलिका खुद। कौन किसकी गरदन मारता है यहां ! यह सब उसके मन का भ्रम है। अब आओ, चलें।''

कुछ दूर चलने पर एलिस को ऐसा मालूम हुआ, जैसे हवाएं रो रही हों, और कोई बड़ी ज़ोर-ज़ोर से आहें भर रहा हो।

ग्रिफिन ने एलिस को बताया, ''यह उसी बने हुए महाकच्छ की आवाज़ है !''

एलिस— कोई बड़ा भारी दुख होगा उसे। क्या दुख है आखिर उसे?

ग्रिफिन— दुख-वुख कुछ नहीं, सब उसका भ्रम है। चली आओ मेरे साथ-साथ।

अब एलिस को आवाजें ऐसी मालूम होने लगीं जैसे लहरें उठती-गिरती हों और हवाएं सिसकियां-सी भरती हों। कोई समुंदर ही धीरे-धीरे कराह रहा हो !

एलिस ने दूर से देखकर पूछा, ''क्या वही है जो उस चट्टान पर झुका हुआ है गुम-सुम बैठा है?''

ग्रिफिन— हां, वही है वह बना हुआ महाकच्छ ! देखो न आंसू की लड़ियां ! और गहरी-गहरी सांसें ! मगर यह सब उसका भ्रम है। उसे असल में कोई दुख नहीं।

उसने बने हुए महाकच्छ के पास जाकर ज़ोर से कहा, ''सुनिए महाराज, यह लड़की आपका इतिहास सुनने बड़ी दूर से आई है !''

बना हुआ महाकच्छ एक गहरी सांस छोड़कर बोला, ''अच्छा, अच्छा; मैं अभी सुनाता हूं। तुम लोग ज़रा शांति से बैठ जाओ।'' एक गहरी सांस लेकर वह फिर मौन हो गया।

थोड़ी देर बाद, ऊबकर एलिस ने आप ही आप कहा, 'कब तक शांति से बैठे रहेंगे?'

बने हुए महाकच्छ ने एक बहुत गहरी सांस ली, और बोला, ''ओह, बहुत दिन की बात है, जब मैं असली कछुआ था। आह !''

इतना कहकर वह फिर चुप हो गया। ग्रिफिन ने दो-तीन बार 'किर्रर' की आवाज की। एलिस ने धीरे-से ग्रिफिन से पूछा, ''इतिहास पूरा हो गया क्या ?''

एकाएक महाकच्छ बोल उठा, ''जब हम बच्चे थे, तो समुंदर के अंदर हम स्कूल जाया करते थे। .... आह ! अपने मास्टर को हम लोग 'कच्छपजी' कहते थे।''

एलिस— क्यों? मास्टरजी को कच्छपजी क्यों कहते थे ?

बना हुआ महाकच्छ— वह थे हमारे शिक्षक, इसलिए। बहुत कम अकल है यह लड़की।

ग्रिफिन— एलिस, ऐसे बुद्धूपने के सवाल पूछते तुम्हें शर्म नहीं आती ? ... कहे जाओ, महाराज, कहे जाओ। सारा दिन मत लगाओ ज़रा-सी बात में।

बना हुआ महाकच्छ— हां, तो हम समुंदर में स्कूल जाया करते थे। तुम्हें शायद विश्वास न होगा।

एलिस— मैंने तो नहीं कहा, कि न होगा।

बना हुआ महाकच्छ लगभग डांटकर ज़ोर से बोला, ''कहा!''

एलिस— नहीं, मैंने नहीं कहा।

ग्रिफ़िन— बको मत। बस!

बना हुआ महाकच्छ— दुनिया में इतना अच्छा स्कूल कहीं नहीं होगा जैसा हमारा था। वहां हम रोज़ स्कूल जाते थे। रोज़!

एलिस— रोज़ तो मैं भी जाती हूं स्कूल। इसमें क्या बात है?

बना हुआ महाकच्छ— और 'अतिरिक्त विषय' भी लिए हैं तुमने?

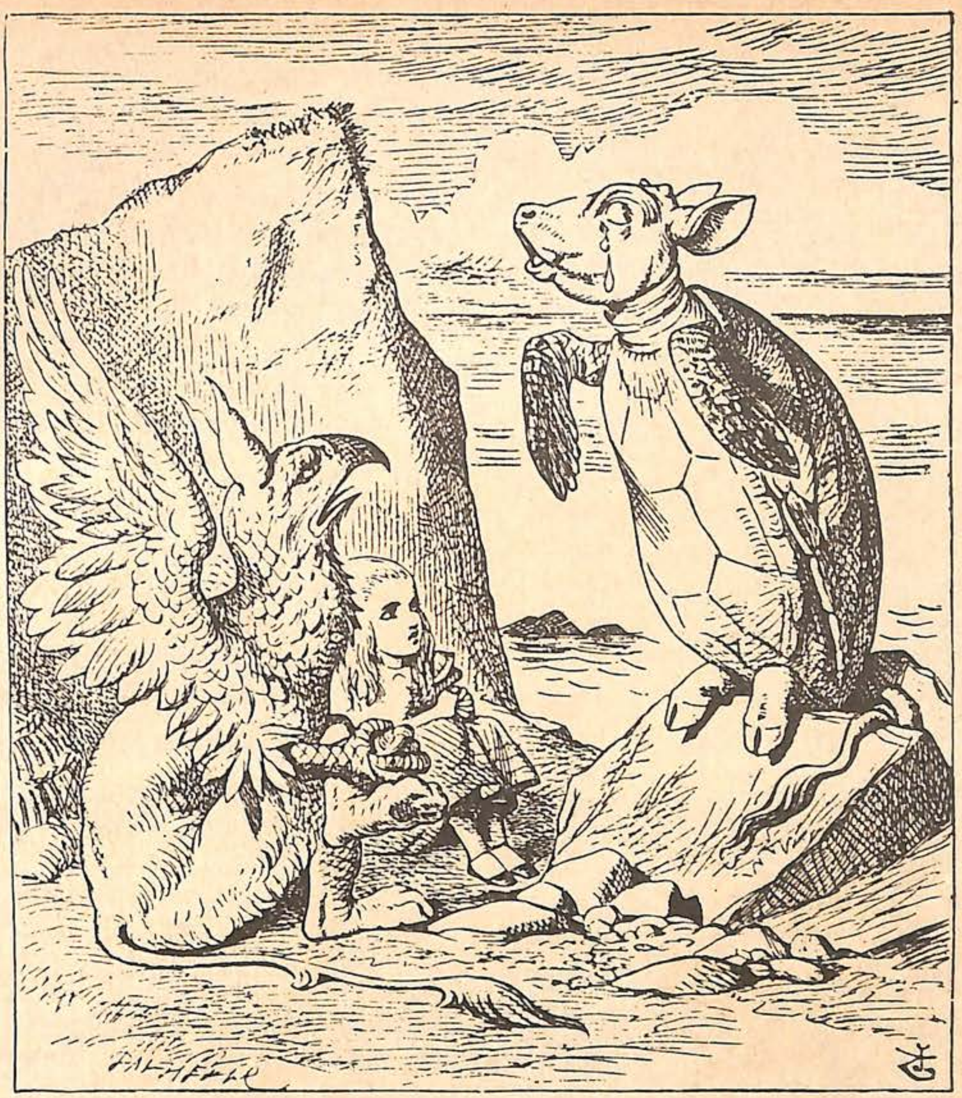
एलिस ने बड़े गर्व से उसे बताया, ''हां! फ्रैंच और संगीत।''

बना हुआ महाकच्छ— और धुलाई?

एलिस ने कुछ उपेक्षा से जवाब दिया, ''नहीं धुलाई-उलाई नहीं।''

बना हुआ महाकच्छ— तब तुम्हारा स्कूल बिलकुल अच्छा नहीं। हमारे स्कूल में तो फ्रैंच, संगीत ... और साथ-साथ धुलाई भी सिखाई जाती थी। ये हमारे 'अतिरिक्त विषय' थे। हां !

और यह कहकर महाकच्छ ने विजय और इत्मीनान की गहरी सांस ली।



एलिस— धुलाई-उलाई सीखने की ज़रूरत भी क्या पड़ती होगी। समुंदर के अंदर तो रहते ही थे।

बना हुआ महाकच्छ— आह, ये सब सीखना बड़ा महंगा पड़ता था। मेरी तो बिसात के ऊपर था। इसीलिए, असल में साधारण विषय ही मैंने लिए थे।

एलिस— वो क्या-क्या थे?

बना हुआ महाकच्छ— 'पौढ़ना' और 'लेटना' तो थे ही। साथ में तरह-तरह का गणित- जैसे, जड़ना, घुटाना, गोड़ देना और बाघ देना।

एलिस— गोड़ देना मैनें नहीं सुना।

ग्रिफिन ने आश्चर्य से एलिस की ओर गरदन घुमाकर देखा और बोला, ''ऑय! गोड़ देना तुमने कभी नहीं सुना ? ... किर्रर! ... 'हाथ' जानती हो 'हाथ'?''

एलिस— हां, हां, अब जैसे ये मेरे हाथ हैं।

ग्रिफिन— तब 'गोड़' नहीं मालूम? जैसे हाथ से घरौंदा बनाया, और पांव से उसे गोड़ दिया। उफ् कैसी बुद्धू लड़की है! किर्रर!

एलिस— अच्छा, अच्छा। फिर और क्या-क्या सीखते थे आप वहां?

बना हुआ महाकच्छ बोला, ''और हम सीखते थे 'उपहास' प्राचीन और आधुनिक। 'समुदरोल' और 'उरांग'। हमारा उरांग-मास्टर था एक सर्पा-मच्छ, गिजविज, लंबा-सा। वही सिखाता था हमें आंख और नाक ईंचना और तरह-तरह से अंग करना। कभी गोल, कभी चौकोर, कभी तिकोना, कभी काला, कभी पीला।''

एलिस— करके दिखाइए तो जरा— कैसे यह सब करते थे।

बना हुआ महाकच्छ— अब तो मेरा जिस्म बहुत कड़ा हो गया है, बहुत ही कड़ा। और ग्रिफ़िन को यह विद्या कभी आई नहीं। नहीं तो ये ही तुम्हें अभी दिखा देता।

ग्रिफिन— मेरे पास समय ही नहीं रहता था। मैं तब पुरानी प्राचीन भाषाएं सीख रहा था। ... मेरा मास्टर एक बड़ा बुड्ढा केकड़ा था ... किर्रर!



बने हुए महाकच्छ ने बहुत गंभीरता से सर हिलाते हुए कहा, ''हां, हां हां,। वही जो 'हासिन' और 'शोकानी' भाषाएं सिखाया करता था!''

एलिस— कितने घंटे रोज पढ़ना पड़ता था?

बना हुआ महाकच्छ— पहले दिन नौ घंटे। दूसरे दिन आठ, तीसरे दिन सात। इसी तरह से रोज़।

एलिस बोली, ''कैसा अजीब था!'' फिर उसे ख़याल आया कि इस तरह तो एक क्लास की पूरी पढ़ाई दस दिन में खत्म हो जाती थी। इसलिए उत्साह और खुशी से वह कह उठी, ''बस! तब ग्यारहवें दिन छुट्टी?''

बना हुआ महाकच्छ— हां, बस, और क्या!

एलिस— फिर बारहवें दिन?

ग्रिफिन— किर्रर्र! ... बस, बहुत हुआ। अब कुछ अपने खेल-कूद के बारे में बताओ। किर्रर्र !

बना हुआ महाकच्छ— ओह! तुम्हें तो समुंदर के नीचे रहने का बहुत ही कम मौका मिला होगा।

एलिस— मैं कभी नहीं रही समुंदर के अंदर।

बना हुआ महाकच्छ— फिर तो किसी झींगे से भी तुम्हारी मुलाकात शायद ही कभी हुई हो।

एलिस ने कहा, ''झींगे का तो मैंने ...'' वह आगे कहने वाली थी कि 'अचार खूब खाया है,' मगर ऐसा कहना ठीक न समझकर अपने को रोक लिया। और यही कह दिया, ''मैंने ... मैंने कभी दर्शन भी नहीं किया!''

बना हुआ महाकच्छ— आह, फिर तुम क्या जानो 'झींगा-कुदान' नाच का आनंद!

एलिस— सचमुच नहीं जानती, वह कैसा नाच होता है?

ग्रिफिन खुद बड़े उत्साह से एलिस को बताने लगा, ''किर्रर्र! ... देखो, इसका यह ढंग है— पहले समुंदर के किनारे एक लाइन में खड़े हो जाओ!''

महाकच्छ तुरंत बोल उठा, ''दो लाइन में! सील-मछली, कछुए बगैरह की अलग लाइन। और जैसे ही रास्ते की जेली- मछलियां साफ हो जाएं ...''

ग्रिफिन हंसकर बीच में ही बोल उठा, ''किर्रर्र, उसमें ज़रा देर लगती है!''

''... तब दो क़दम आगे!'' महाकच्छ ने ड्रिलमास्टर की आवाज़ में कहा।

ग्रिफिन (बड़े उत्साह से)— बग़ल में एक-एक झींगा दबाए।

बना हुआ महाकच्छ— इसी तरह दो बार आगे- झींगों समेत!

ग्रिफिन— फिर उन्हें दूसरी बग़ल में करके, पीछे लौटो!

बना हुआ महाकच्छ—और फिर वे झींगें ...!

ग्रिफिन— (उत्साह से चीखकर) फेंक दो!

बना हुआ महाकच्छ— दू...र समुंदर में-जितनी दूर हो सके!

ग्रिफिन— (बहुत खुश होकर) और तैर जाओ उनके पीछे!

बना हुआ महाकच्छ— कलाबाज़ी खाते हुए!

ग्रिफिन— अब झींगे दूसरी बग़ल में कर लो!

बना हुआ महाकच्छ बोला, ''और फिर वापस जहां से चले थे!'' कवायद के ढंग से यह सब बताकर वह कुछ थक गया था। फिर बोला, ''यह नाच का पहला चक्कर हुआ। आह, समझ गईं?''

एलिस— हां। यह तो बड़ा अच्छा नाच होगा।

बना हुआ महाकच्छ— थोड़ा सा अभी देखना चाहोगी?

एलिस— हां, हां, बड़े शौक से!

बना हुआ महाकच्छ— बस, एक ही चक्कर नाचेंगे पहले। झींगों की क्या जरूरत है यहां, क्यों ग्रिफ़िन? ... मगर साथ में गाएगा कौन, तुम या मैं?

ग्रिफिन— अरे, तुम्हीं गाओ। मुझे तो बोल भी याद नहीं रहे।

बने हुए महाकच्छ ने धीरे-धीरे गाना शुरू किया। ग्रिफिन और एलिस उसकी ताल पर कदम उठाकर नाचने लगे।

झींगा कुदान का गीत

बड़ी सफेदा मछली बोली, प्यारे घोंघा आओ।
पीछे-पीछे नाकू आता, जल्दी कदम बढ़ाओ।

नन्हे-मुन्हे कछुए देखो, संग तैरते जाते।
सारे झींगे देख रहे हैं, हम दोनों को आते।

आओ, आओ, चले भी आओ, चले भी आओ साथ।
मत घबराओ, चले भी आओ, चले भी आओ साथ।

लहरें हमको दूर उछालें, आगे ही ले जाएं।
लहरों में आनंद बड़ा है, आओ नाचें गाएं।

घोंघा बोला—दूर बहुत है, सागर पार किनारा।
और सबों को जाने दो, मैंने तो यही विचारा।

मेरा दिल तो धुक-धुक करता, दूर पड़ेगा जाना—
नहीं जाऊंगा, नहीं जाऊंगा, नहीं जाऊंगा साथ।

जैसा अपना देस है घोंघे, वैसा देस बिराना।
छूटी जब इंग्लैंड की मिट्टी, मिली फ्रांस की रेती।

नई हवाएं सागर के उस पार, लहरियां लेतीं।
प्यारे घोंघे चले भी आओ, चले भी आओ साथ।

मत घबराओ, मेरे घोंघे, चले भी आओ साथ।

नाच खत्म होते ही एलिस ने कहा, "यह तो बड़ा अच्छा नाच रहा। और सफेदा मछली का गीत तो मुझे बहुत ही अच्छा लगा। कैसा अनोखा-सा गीत है!"

बना हुआ महाकच्छ—सफेदा मछली तो तुमने जरूर देखी होगी!

'हां, खाने म्...' इतना कहते ही एलिस ने एकदम ज़बान रोक ली। इससे सिर्फ़ 'खाने म्' सुनाई पड़ा, 'खाने में' नहीं।

बना हुआ महाकच्छ—'खाने म्' तो मालूम नहीं किए शहर का नाम है। होगा किसी शहर का! मगर 'सफेदा' नाम क्यों पड़ा, मालूम है?

एलिस—यह तो मैंने कभी सोचा नहीं।

ग्रिफिन—किर्रर! मैं बताता हूं। इसलिए पड़ा कि इससे खेलने के जूतों पर सफेदी की जाती है।

"आप! सफेदा मछली से?" एलिस ने ताज्जुब से पूछा।

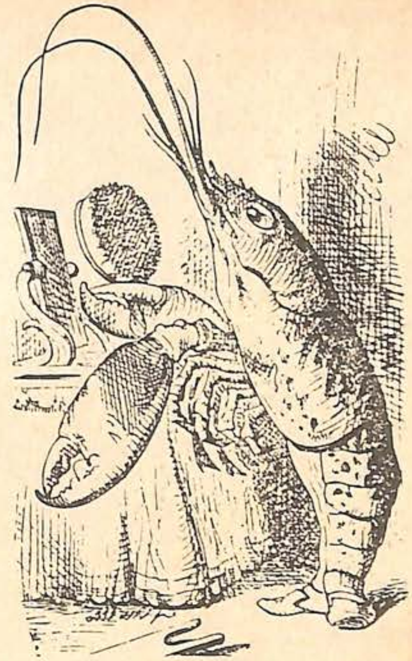
ग्रिफिन—हां, और क्या। समुंदर के नीचे सब जूतों पर इसीसे सफेदी होती है। किर्रर!

एलिस—अच्छा। अगर मैं सफेदा-मछली होती न, तो नाकू से कहती, कि मेहरबानी करके मेरे पीछे-पीछे मत आइए।

बना हुआ महाकच्छ—नहीं, वह तो ज़रूरी है! जो भी असली अकलमंद मछली होगी, वह उसके साथ-साथ चलेगी। उसके बिना काम ही नहीं चल सकता।

एलिस—आंय!... नाकू के बिना? वह कैसे?

इस सवाल पर ग्रिफिन ने एलिस की तरफ ऐसे देखा, जैसे कि वह बहुत ही बुद्धू हो। फिर तीखे स्वर में बोला, "इतना भी नहीं जानती? सुना नहीं, जब कोई बाहर जाता है तो उसे कहते हैं—नाकू की सीध में



जाओ!"

एलिस—आपका मतलब 'नाक' से है?

ग्रिफ़िन—जो मेरा मतलब है वही मैं कहता हूं। किर्रर!

बना हुआ महाकच्छ—ये तुम्हारी समझ से बहुत दूर की बातें हैं। छोड़ो इनको! अब तुम अपनी कहानी सुनाओ।

एलिस बोली, "अरे मेरी मत सुनो। मुझको और मेरे दिमाग़ को आज न जाने क्या हो गया है! कभी मैं बहो..त बड़ी हो जाती हूं, कभी बहो..त छोटी... बहो..त ही छोटी, और कभी, जाती हूं कहीं तो पहुंच जाती हूं कहीं। और कभी कहना चाहती हूं कुछ तो निकलता है मुंह से कुछ। सब याद किए हुए पाठ, कविताएं, हिसाब उल्टे-पुल्टे हो गए हैं। अब जैसे वह अच्छी-भली कविता है न, 'दादा विलियम', वह मेरे दिमाग में पूरी की पूरी बदल गई है।"

ग्रिफिन—उंह! सब तुम्हारा भ्रम है। ऐसा कुछ नहीं हुआ।

एलिस—नहीं, सच!

बना हुआ महाकच्छ—कुछ सुनाओ तो, देखें।

ग्रिफिन—अच्छा, वह सुनाओ तो ज़रा—'लड़का बोली बोल रहा, सुन लो कोयल की तान!'

एलिस को परेशानी महसूस हो रही थी। वह आप ही आप बुड़बुड़ाने लगी, 'मेरा तो सिर चकरा रहा है। कान में झींगे ही झींगे बोल रहे हैं। यहां भी जैसे क्लास में आ गई।'

बना हुआ महाकच्छ—याद नहीं क्या? जल्दी

सुनाओ, जल्दी! एकदम!

एलिस ने झटपट सुनाना शुरू कर दिया—

झींगा बोल रहा है : सुन लो झींगे की झनताल—
छुन्न-छुन्न जलते हैं मेरे खड़े नाक के बाल।
बत्तख जैसे चोंच से,
यह अपनी फर्शी नाक से
चौड़े करता है बूटों के पंजे बड़े तपाक से।
मगन लार्क है
मस्त शार्क है,
गाता वाउर झींगा,
सागर की सूखी रेती में
फूंक रहा है सींगा।
लेकिन जब लहरें उठती हैं,
दांत दिखाती शार्कें;
झींगे की आवाज़ कांपती—
रोती चीखें मार के।

ग्रिफिन और बना हुआ महाकच्छ दोनों ही बोले, "उहुंक्, उहुंक्, उहुंक! बिलकुल नहीं!"

ग्रिफिन—यह वह कविता थोड़े ही है!

बना हुआ महाकच्छ—नहीं, यह वह कविता नहीं, यह वह कविता नहीं है। ना! इस कविता का तो कोई अर्थ ही नहीं है। भला वह नाक से बूटों के पंजे कैसे चौड़ा करेगा?

ग्रिफिन—नहीं, नहीं, नहीं। इसका कोई अर्थ नहीं। किर्रर्र! अच्छा वह सुनाओ... वह तो याद होगी, 'जाती थी मैं नदी किनारे'?

एलिस ने घबराए हुए से स्वर में सुनाना शुरू किया—

जाती थी मैं नदी किनारे एक आंख मीचे-मीचे,
देखा—एक गुलदार औ' उल्लू गोश्त उड़ाते हैं नीचे।
माल-मसाला, हड्डी-पड्डी चाट गया गलदार सभी,
उल्लू के पंजे में खाली पड़ी रकाबी रही पड़ी।
दावत खत्म हुई तो बोला उल्लू से गुलदार,
चम्मच भी ले चले जेब में डाल। बहुत हुशियार।
कांटा-छुरी मेरे हैं अब, मैं उनका हकदार।
दावत खतम—माल हजम। जाओ अब घर जाओ।

बना हुआ महाकच्छ—बस, बस, बस! क्या फायदा सब ऊटपटांग! किताब के पाठ में ऐसा कुछ नहीं है।

ग्रिफिन—अब इससे मत पूछो, बेचारी से। हां, बस, अब वही झींगा-कुदान वाला नाच पूरा हो जाए, क्यों मिस एलिस, या कोई और गीत सुनोगी?

एलिस—कोई गीत!

ग्रिफिन—यही तुम्हारी पसंद है, तो फिर कच्छू भाई, इसे सुना दो वही 'कछुए का सूप' वाला गीत। किर्रर्र!

बने हुए महाकच्छ ने एक गहरी सांस छोड़कर कहा, "सुनो!

बड़े मजे का सूप हरा—
बड़े मजे का सूप।
हरा-हरा
गरमा-गरम
भरा धरा
बड़े मजे का सूप।।1।।
बढ़िया खाने-पीने वालो,
इसमें अपने चम्मच डालो।
शाम सुनहरी,
पीली गहरी,
भरी शाम का सूप धरा।
हरा-हरा
गरमा-गरम
भरा धरा।
बड़े मजे का सूप।।2।।
इसके आगे मच्छी क्या है।
चाट अच्छी से अच्छी क्या है।
दो पैसे का
बड़े मजे का
भरा सकोरा, सूप धरा।
हरा-हरा
गरमा-गरम
भरा धरा
बड़े मजे का सूप।
बड़े मजे का सूप।।3।।

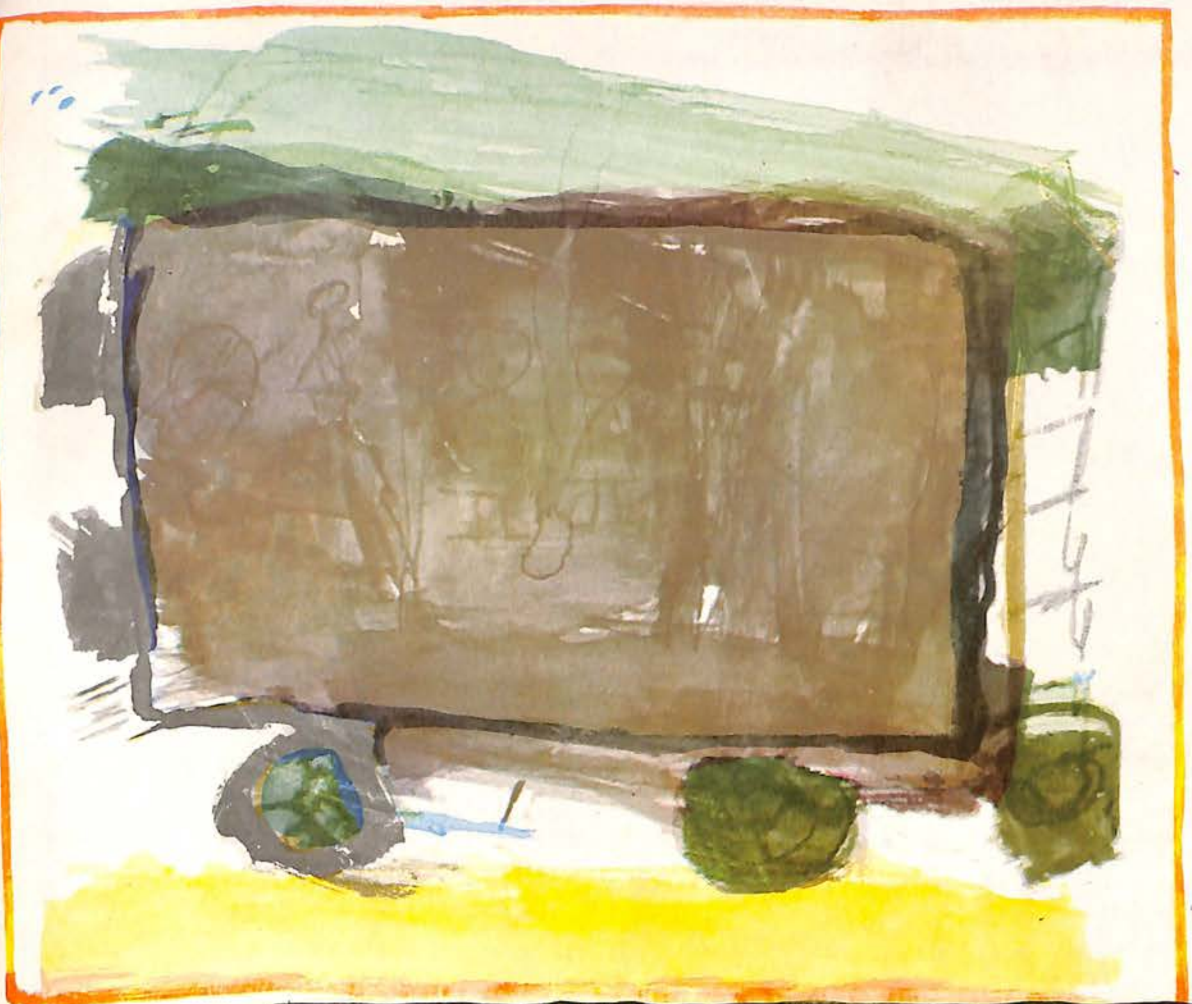
ग्रिफिन ने झूमकर कहा, "वाह! वाह! वाह! किर्रर्र!"

इसी बीच एक हल्ला-सा कहीं दूर पर सुनाई दिया। कोई पुकार-पुकार कर ऐलान कर रहा था, "मुकदमा शुरू हो गया!"

ग्रिफिन ने एकदम एलिस का हाथ पकड़ा और कहा, "बस, एलिस, अब छोड़ो इस गीत को। चलो, चलकर मुकदमे का दृश्य देखें। वहां बड़े-बड़े गुल खिलने वाले हैं।"

(अगले अंक में जारी)

लेखक : लुइस कैरल प्रस्तुतकर्त्ता : शमशेर बहादुर सिंह



बस



जीप मैं सवार मोटा आदमी

दोनों चित्र स्वाधीन जैन, 6 वर्ष,
होशंगाबाद

चकमक

पंजीयन क्रमांक 1317/सा/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87



स्वाधीन जैन, होशंगाबाद

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से